डीआरडीओ समाचार

डीआरडीओ की मासिक गृह पत्रिका

https://www.drdo.gov.in/samachar ISSN: 0971-4405 नवम्बर 2025 खण्ड 37 अंक 11

प्रतिबिंब 2025: सूचना युद्ध के युग में धारणाओं का निर्माण

डीआरडीओ समाचार के ई-संस्करण तक पहुंचने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

मुख्य संपादक: किरण चौहान
सह मुख्य संपादक: सुधांशु भूषण
संपादक: दीप्ति अरोरा
सहायक संपादक: धर्म वीर
संपादकीय सहायक: रमन
अनुवादक: अनुराग कश्यप

प्रकाशन का 37वां वर्ष

नवम्बर 2025 खण्ड 37 अंक 11

हमारे संवाददाता

अहमदनगर	:	श्री आर ए शेख, वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (वीआरडीई)
अंबरनाथ	:	डॉ गणेश एस धोले, नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल)
बालासोर	:	श्री मृणाल गोस्वामी, एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर)
		श्री रत्नाकर एस महापात्रा, प्रूफ एवं प्रयोगात्मक संगठन (पीएक्सई)
बेंगलूरु	:	श्री श्रीराम जी एन, वैमानिकी विकास स्थापना (एडीई)
		श्रीमती एम आर भुवनेश्वरी, वायुवाहित प्रणाली केंद्र (सीएबीएस)
		श्रीमती फहीमा ए जी जे, कृत्रिम ज्ञान एवं रोबोटिकी केंद्र (सीएआईआर)
		डॉ जोसेफिन निर्मला एम, युद्धक विमान प्रणाली विकास एवं एकीकरण केंद्र (सीएएसडीआईसी)
		श्री जितेन्द्र कुमार तथा श्री वेदांग चौहान, सैन्य उडान योग्यता एवं प्रमाणन केंद्र (सेमिलेक)
		डॉ संचिता सिल तथा डॉ सुधीर एस काम्बले, रक्षा जैव प्रौद्योगिकी और विद्युत चिकित्सकीय प्रयोगशाला (डीईबीईएल)
		डॉ वी सेंथिल, गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जीटीआरई)
		श्रीमती साइमा बशीर, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं रडार विकास स्थापना (एलआरडीई)
		सुश्री मीता जना, सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी)
चंडीगढ़	:	डॉ पाल दिनेश कुमार, चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशला (टीबीआरएल)
		डॉ अनुजा कुमारी, रक्षा भू–सूचना विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीजीआरई)
चेन्नई	:	श्री के अंबाझगन, युद्धक वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (सीवीआरडीई)
देहरादून	:	श्री सचिन ओबराय, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डीईएएल)
		श्री जे पी सिंह, यंत्र अनुसंधान एवं विकास स्थापना (आईआरडीई)
दिल्ली	:	श्री विकास कश्यप, कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केंद्र (सेप्टेम)
		श्री विशाल द्विवेदी, अग्नि, पर्यावरण तथा विस्फोटक सुरक्षा केंद्र (सीएफईईएस)
		डॉ के पी मिश्रा, रक्षा शरीरक्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास)
		श्री संतोष कुमार चौधरी, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर)
		श्रीमति अरुण कमल, डीपीए आर ओ एंड एम, डीआरडीओ मुख्यालय
		डॉ नवीन कुमार सोनी, नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (आईएनएमएएस)
		डॉ सुजाता दास, पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा)
		श्रीमती सुगंधा अग्रवाल, भर्ती एवं मूल्यांकन केंद्र (आरएसी)
		श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एसएजी)
		डॉ रुपेश कुमार चौबे, ठोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एसएसपीएल)
ग्वालियर	:	डॉ एम के मेघवंशी, रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीआरडीई)
हल्द्वानी	:	डॉ अतुल ग्रोवर, रक्षा जैव–ऊर्जा अनुसंधान संस्थान (डिबेर)
हैदराबाद	:	डॉ ए नागेन्द्रानाथ , उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एएसएल)
		श्री श्रीनिवास जुलुरू, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल)
		श्री सीएच नरसिम्हाचारी, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएलआरएल)
		श्री एस शशी नाथ, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल)
जगदलपुर	:	श्री खिलावन सिंह, एसएफ परिसर (एसएफसी)
जोधपुर	:	श्री डी के त्रिपाठी, रक्षा प्रयोगशाला (डीएल)
कानपुर	:	डॉ मोहीत कटियार, रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान और विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई)
कोच्चि	:	श्रीमती लता एम एम, नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल)
लेह	:	डॉ डॉर्जी आंगचॉक, रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (दिहार)
मसूरी	:	श्री सुनील भण्डारी, प्रौद्योगिकी प्रबंध संस्थान (आईटीएम)
मैसूर	:	डॉ एम पालमुरुगन, जैव–रक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईबीटी)
नासिक	:	श्री आशुतोष शर्मा, ऊर्जस्वी पदार्थ उन्नत केंद्र (एसीईएम)
पुणे	:	श्री अजय के पांडे, आयुध अनुसंधान और विकास स्थापना (एआरडीई)
		डॉ विजय पट्टर, रक्षा उन्नत प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईएटी)
		डॉ गणेश शंकर डोम्बे, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल)
		डॉ अनूप आनंद, अनुसंधान एवं विकास स्थापना (ई) (आर एण्ड डीई)
तेजपुर	:	डॉ के एस नखुरु, रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरएल)
विशाखापत्तनम	:	श्रीमती ज्योत्सना रानी, नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल)

इस अंक में

मुख्य लेख 4

नवोन्मेष 5

परीक्षण 6

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण 8

अवसंरचना विकास 10

विशेष लेख 11

घटनाक्रम 12

मानव संसाधन विकास क्रियाकलाप 17

कार्मिक समाचार 30

राजभाषा गतिविधियाँ 31

खेलकूद एवं सामाजिक गतिविधियाँ 36

निरीक्षण/दौरा कार्यक्रम 37

वर्तमान अंक, *DRDO Newsletter,* Vol 45, Issue 11, November 2025, का हिंदी अनुवाद है।

अपने सुझावों से हमें अवगत कराने के लिए कृपया संपर्क करें:
director.desidoc@gov.in; drdonl.desidoc@gov.in
दूरभाष: 011-23902403, 23902472, फैक्स: 011-23819151

"ब्रह्मांड में हमारी नगण्यता को समझते हुए भी, विज्ञान हमें अपने आप को जानने का एक अवसर देता है।''- कार्ल सागन

प्रतिबिंब 2025: सूचना युद्ध के युग में धारणाओं का निर्माण

23 सितंबर 2025 को डीआरडीओ भवन, दिल्ली में प्रबंधन सेवा निदेशालय (डीएमएस), जन संपर्क निदेशालय (डीपीआई) तथा प्रौद्योगिकी विकास कोष निदेशालय (डीटीडीएफ) के सहयोग से ''सूचना युद्ध के युग में धारणा प्रबंधन और वृत्तांत तथा धारणा के निर्माण में महारत'' पर सेमिनार 'प्रतिबिंब' का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति से सेमिनार की शोभा बढ़ गई। डॉ एस क्रिस्टोफर, पूर्व सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ, मुख्य अतिथि थे, जबकि श्री धीरेंद्र ओझा, महानिदेशक, प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी), माननीय अतिथि थे। उनकी उपस्थिति और विचारोत्तेजक भाषणों ने विचार–विमर्श की दिशा निर्धारित की, जिसमें सूचना युद्ध के युग में राष्ट्रीय हितों की रक्षा में धारणा प्रबंधन और रणनीतिक वृत्तांत की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया गया।

सेमिनार में मीडिया धारणा, संसद और सार्वजनिक विश्वास, मंत्रालयों के दृष्टिकोण, तथा उद्योग साझेदारी के माध्यम से डीआरडीओ के ब्रांड निर्माण पर क्रमशः कई सत्र हुए। शीर्ष मीडिया घरानों के वक्ताओं, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मीडिया कम्युनिकेशन के प्रोफेसरों, लोकसभा के अपर सचिव (सेवानिवृत्त) तथा राज्यसभा के संयुक्त सचिव, और एमएसएमई उद्योगों ने सेमिनार के विभिन्न सत्रों को संबोधित किया।

इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रयोगशालाओं/स्थापनाओं के विशेषज्ञ, वरिष्ठ अधिकारी, और प्रतिभागी एकत्रित हुए, जिन्होंने सूचना, संचार, और वृत्तांत निर्माण की गतिशीलता पर विचारशील चर्चाओं में भाग लिया। संगोष्ठी में आज की परस्पर जुड़ी दुनिया में गलत सूचनाओं, प्रभावकारी कार्यों, और धारणा संबंधी चुनौतियों का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए स्वदेशी रणनीतियाँ विकसित करने, प्रौद्योगिकी का उपयोग करने और नवीन दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

'प्रतिबिंब' कार्यक्रम का सफल आयोजन राष्ट्रीय एवं सामरिक महत्व के मुद्दों पर बौद्धिक आदान–प्रदान और जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए डीआरडीओ की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डीएमएस, डीपीआई, और डीटीडीएफ के सहयोगात्मक प्रयास ने सूचना युग में धारणाओं को आकार देने और प्रभाव हासिल करने के लिए संवाद, ज्ञान–साझाकरण, और दूरदर्शी दृष्टिकोणों के लिए एक सार्थक मंच तैयार किया।

डीआरडीओ ने सैन्य संचार में अंतर-संचालन को सक्षम करने के लिए भारतीय रेडियो सॉफ्टवेयर आर्किटेक्चर मानक 1.0 जारी किया

रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डीईएएल), देहरादून द्वारा 6 अक्टूबर 2025 को डीआरडीओ भवन, नई दिल्ली में भारतीय रेडियो सॉफ्टवेयर आर्किटेक्चर (IRSA) पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई, जो भारत के मानकीकृत और आत्मनिर्भर सॉफ्टवेयर परिभाषित रेडियो (SDR) पारिस्थितिकी तंत्र की दिशा में एक बड़ा कदम है।

उद्घाटन संबोधन में, डीएस एवं डीजी (ईसीएस) डॉ बी के दास ने वैश्विक सैन्य संचार बाजार के लिए भारतीय SDR पारिस्थितिकी तंत्र को तैयार करने में IRSA की उत्पत्ति, दर्शन, और भूमिका पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने इस बात पर जोर दिया कि IRSA केवल एक दस्तावेज नहीं है, बल्कि एक राष्ट्रीय SDR पारिस्थितिकी तंत्र की नींव है, जो तरंग–रूप सुवाह्यता, विभिन्न प्लेटफार्मों पर अंतर–संचालनीयता और भविष्य की तकनीकी प्रगति में लचीलापन सुनिश्चित करता है।

मुख्य अतिथि एयर मार्शल आशुतोष दीक्षित, एवीएसएम, वीएसएम, वीएम, सीआईएससी तथा प्रोफेसर रजत मूना, अध्यक्ष एचएलएसी एवं निदेशक आईआईटी, गांधीनगर ने इस पहल को बनाए रखने में उपयोगकर्ता प्रतिक्रिया, मानक अपनाने और सेवाओं, उद्योगों तथा अनुसंधान संस्थानों के बीच सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया।

इस कार्यक्रम में सशस्त्र बलों, मानकीकरण निदेशालय (डीओएस), रक्षा उत्पादन विभाग (डीडीपी), डीआरडीओ प्रयोगशालाओं, रक्षा उत्पादन क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों (डीपीएसयू), उद्योग और शिक्षा जगत के प्रमुख हितधारक एक साथ आए। कार्यशाला ने भारतीय SDR समुदाय को IRSA अपनाने के प्रति संवेदनशील बनाने, एकजुट करने और सक्रिय करने के अपने उद्देश्यों को प्राप्त किया। इसने एक साझा राष्ट्रीय दृष्टिकोण के तहत उपयोगकर्ताओं, डेवलपर्स, और नीति निर्माताओं को एकजुट करते हुए, सहयोगात्मक नवाचार की शक्ति का प्रदर्शन किया। डीआरडीओ द्वारा उद्घाटन सत्र के दौरान SDR के लिए एक व्यापक सॉफ्टवेयर मानक, IRSA संस्करण 1.0, औपचारिक रूप से प्रस्तुत किया गया, जो डीआरडीओ, डीओएस, सेवाओं, शिक्षा जगत, और उद्योग भागीदारों के वर्षों के संयुक्त प्रयास का परिणाम है।

एसीईएम में K5-S2 रॉकेट मोटर का स्थैतिक परीक्षण

नासिक के ऊर्जस्वी पदार्थ उन्नत केंद्र (एसीईएम) ने 12 सितंबर 2025 को प्रोजेक्ट K5 स्टेज 2 रॉकेट मोटर, जो कि 10T श्रेणी की मोटर है, का सफलतापूर्वक स्थैतिक परीक्षण किया। प्रोजेक्ट K5, स्टेज–2 रॉकेट मोटर में T700 कार्बन फाइबर और एपोफाइन रेजिन के साथ एक मिश्रित आवरण है। रॉकेट मोटर की कुल लंबाई 2680 मिमी और व्यास 2400 मिमी है। प्रणोदक कण HD 1.3 मिश्रित प्रणोदक से डिजाइन किया गया है जिसमें 9 डीप फिन्स, एक फिनोसिल कण विन्यास, और उच्च दहन दर है। डीप फिनोसिल कण को एक बंधने वाले खराद का धुरा उपयोग करके ढाला जाता है। मोटर को चालू करने के लिए प्रयुक्त प्रज्वलन प्रणाली पाइरोजेन प्रकार की है। मोटर में एक जलमग्न नोजल है जिसमें नोजल फ्लेक्सिंग के लिए दो एक्चुएटर लगे हैं। स्थैतिक परीक्षण का मुख्य उद्देश्य रॉकेट मोटर के बैलिस्टिक प्रदर्शन का मूल्यांकन करना और रॉकेट मोटर की सभी उप–प्रणालियों के सुरक्षा मार्जिन और प्रदर्शन का मूल्यांकन करना था। 250 से ज्यादा चैनलों के इंस्ट्रूमेंटेशन डेटा रिकॉर्ड करके यह परीक्षण सफलतापूर्वक किया गया। दो इलेक्ट्रोमैकेनिकल एक्चुएटर्स का उपयोग करके $\pm 2^{o}$ का नोजल फ्लेक्सिंग किया गया। एक्चुएटर ड्यूटी साइकिल T0+10s पर शुरू किया गया। डेटा को वास्तविक समय में, पूर्वानुमान वक्र के साथ रिकॉर्ड और प्रदर्शित किया गया। दाब–समय और थ्रस्ट–समय प्रोफाइल पूर्वानुमान डेटा से मेल खाते थे।

स्थैतिक परीक्षण के लिए टीएआरबी की अध्यक्षता श्री टी जी कस्तूरीरंगन, पूर्व महाप्रबंधक, एसएफसी ने की। स्थैतिक परीक्षण श्री एम एस आर प्रसाद, पूर्व महानिदेशक (एमएसएस); श्री बी वी पापा राव, पूर्व निदेशक, एएसएल; परियोजना निदेशक K5; तथा महाप्रबंधक, एसीईएम की उपस्थिति में किया गया।

मोटर का प्रसंस्करण एसीईएम स्थित नवनिर्मित 50T–क्षमता वाली कास्ट क्योर सुविधा में किया गया, जहाँ हॉपर–आधारित सतत कास्टिंग की सुविधा उपलब्ध है। मोटर की सफल कास्टिंग ने इस प्रक्रिया को प्रमाणित कर दिया है और 50T श्रेणी की मोटर के प्रसंस्करण का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। वर्तमान मॉडल अपनी तरह की पहला मोटर है जिसका एसीईएम में हाल ही में नवीनीकृत स्थैतिक परीक्षण सुविधा में सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया है।

डीआरडीओ द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित सैन्य लड़ाकू पैराशूट प्रणाली का 32,000 फीट की ऊंचाई पर सफलतापूर्वक परीक्षण

डीआरडीओ द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित सैन्य लड़ाकू पैराशूट प्रणाली (MCPS) ने 32,000 फीट की ऊँचाई से सफलतापूर्वक लड़ाकू फ्रीफॉल जंप किया। यह जंप भारतीय वायु सेना के परीक्षण जम्परों द्वारा किया गया, जिसने स्वदेशी प्रणाली की दक्षता, विश्वसनीयता और उन्नत डिजाइन को प्रदर्शित किया। यह उपलब्धि MCPS को भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा वर्तमान में परिचालन में उपयोग में आने वाला एकमात्र पैराशूट प्रणाली बनाती है जो 25,000 फीट से ऊपर तैनाती में सक्षम है।

MCPS को डीआरडीओ की प्रयोगशालाओं– हवाई वितरण अनुसंधान एवं विकास स्थापना (एडीआरडीई), आगरा, तथा रक्षा जैव प्रौद्योगिकी और विद्युत चिकित्सकीय प्रयोगशाला (डीईबीईएल), बेंगलुरु द्वारा विकसित किया गया है। इसमें कई उन्नत सामरिक विशेषताएँ शामिल हैं, जिनमें कम गति से उतरने और बेहतर स्टीयरिंग क्षमताएँ शामिल हैं, जो पैराट्रूपर्स को विमान से सुरक्षित रूप से बाहर निकलने, पूर्व निर्धारित ऊँचाई पर पैराशूट तैनात करने, सटीक नेविगेशन करने और निर्दिष्ट क्षेत्रों में उतरने में सक्षम बनाती हैं। यह प्रणाली भारतीय नक्षत्र के साथ नेविगेशन के लिए अनुकूल है, साथ ही हमारे चुनाव अनुसार किसी भी विरोधी के खिलाफ उपयोग की स्वतंत्रता प्रदान करती है और बाहरी पक्षों/राष्ट्रों द्वारा हस्तक्षेप आदि के प्रति अतिसंवेदनशील नहीं है।

इस प्रणाली की सफलता ने स्वदेशी पैराशूट प्रणालियों को शामिल करने के द्वार खोल दिए हैं। आयातित उपकरणों की तुलना में नियमित रखरखाव और मरम्मत में लगने वाले कम समय के कारण, यह पैराशूट प्रणाली अपने जीवनकाल में अधिकतम उपयोगिता सुनिश्चित करेगी। यह परियोजना संघर्ष और युद्ध के समय इसकी सेवाक्षमता के लिए अन्य देशों पर निर्भरता को भी कम करेगी।

माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने इस सफल प्रदर्शन के लिए डीआरडीओ, सशस्त्र बलों, और उद्योग जगत को बधाई दी। उन्होंने इसे भारत की स्वदेशी रक्षा क्षमताओं के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बताया।

डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने इस प्रदर्शन से जुड़ी डीआरडीओ टीम की सराहना की है। उन्होंने इसे हवाई वितरण प्रणालियों के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम बताया।

ABHYAS का प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

देश के रक्षा तंत्र में हवाई लक्ष्य एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। डीआरडीओ, बेंगलुरु स्थित वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (एडीई) द्वारा डिजाइंड और विकसित, ABHYAS हाई स्पीड एक्सपेंडेबल एरियल टारगेट (HEAT), ने परियोजना के सभी उद्देश्यों को पूरा करते हुए दस सफल उड़ान परीक्षण पूरे कर लिए हैं। हाल के उड़ान परीक्षणों ने इस प्रणाली की विश्वसनीयता को प्रदर्शित किया है। अभ्यास के विनिर्देश दुनिया भर में निर्मित समकक्ष व्यय योग्य हवाई लक्ष्यों के अनुरूप हैं। उड़ती हुई वस्तुओं पर नजर रखने और उन्हें लक्षित करने के कुशल प्रशिक्षण के लिए आवश्यक आरसीएस, आईआर और दृश्य संवर्द्धन हेतु विभिन्न पेलोड वाले विभिन्न अभ्यास विन्यासों का सफलतापूर्वक उड़ान परीक्षण किया गया है।

एडीई द्वारा डिजाइन की गई लघु अत्याधुनिक तकनीकों, ऑटोपायलट के साथ स्वचालित उड़ान और एक कॉम्पैक्ट लैपटॉप–आधारित ग्राउंड कंट्रोल सिस्टम (GCS) से युक्त प्रणालियाँ ABHYAS में एकीकृत की गई हैं। GCS विमान एकीकरण और उड़ान–पूर्व जाँच के साथ–साथ स्वचालित उड़ान भी कर सकता है तथा इसमें उड़ान के बाद के विश्लेषण के लिए उड़ान के दौरान डेटा रिकॉर्ड करने की सुविधा भी है। ABHYAS को एएसएल, हैदराबाद द्वारा डिजाइन किए गए बूस्टर द्वारा प्रक्षेपित किया जाता है और इसे एक छोटे गैस टरबाइन इंजन से उड़ाया जाता है। यह अनुसंधान केंद्र इमारत (आरसीआई), हैदराबाद द्वारा डिजाइन किए गए नेविगेशन सिस्टम का उपयोग करता है। इसके साथ, ABHYAS तोपखाने, हवा से हवा में युद्ध, तीनों सेनाओं द्वारा युद्ध पोत लक्ष्य अभ्यास और डीआरडीओ द्वारा नव विकसित मिसाइलों के मूल्यांकन में सक्षम है। इसके विन्यास को कामिकेज ड्रोन, लोइटरिंग म्यूनिशन, मानव–मानव रहित टीमिंग, डिकॉय आदि जैसे विभिन्न मिशनों के संचालन के लिए मामूली संशोधनों के साथ और भी अनुकूलित किया जा सकता है।

दो निर्धारित उत्पादन एजेंसियों (पीए), मेसर्स एलएंडटी तथा मेसर्स एचएएल, को विनिर्माण, सिस्टम एकीकरण और उड़ान परीक्षणों में शामिल किया गया है। इन निर्धारित उत्पादन एजेंसियों के सहयोग से, ABHYAS को एक लागत–प्रभावी प्रणाली के रूप में स्थापित किया गया है जो उत्पादन के लिए तैयार है और निर्यात क्षमता रखती है। मेसर्स एलएंडटी लिमिटेड को टीओटी जारी कर दिया गया है।

नाविक योग्यता प्रणाली का हस्तांतरण

भारतीय नौसेना के नाविकों को विभिन्न शाखाओं के आवंटन के लिए एक वैज्ञानिक उपकरण, नाविक अभिक्षमता प्रणाली, 22 सितंबर 2025 को आईएनएस चिल्का में रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर), दिल्ली द्वारा आईएनएस चिल्का को सौंप दी गई।

SAS एक कम्प्यूटरीकृत अभिक्षमता परीक्षण (एप्टीट्यूड बैटरी) है जिसे कई क्षेत्रीय परीक्षणों और निरंतर उपयोगकर्ता इंटरैक्शन के आधार पर विकसित एवं मानकीकृत किया गया है। आईएनएस चिल्का के प्रशिक्षकों को नाविक अभिक्षमता परीक्षण का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया है।

डीटीटीसी (डीएमएसआरडीई), लखनऊ और सीएसजेएमयू, कानपुर के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

रक्षा प्रौद्योगिकी एवं परीक्षण केंद्र (डीटीटीसी, डीएमएसआरडीई), लखनऊ तथा छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय (सीएसजेएमयू), कानपुर के बीच 12 सितंबर 2025 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इसका उद्देश्य अत्याधुनिक तकनीकों के स्तर तक उत्कृष्टता प्राप्त करने के उद्देश्य से तकनीकी दक्षताओं को और उन्नत करना है। डॉ किंगसुक मुखोपाध्याय, ओएस एवं निदेशक, डीएमएसआरडीई तथा सीएसजेएमयू के कुलपति प्रो0 विनय पाठक ने सीएसजेएमयू के वरिष्ठ वैज्ञानिकों और वरिष्ठ संकाय सदस्यों की उपस्थिति में इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता ज्ञापन देश और समाज के हित में वैज्ञानिक ज्ञान में प्रगति हेतु सहयोगात्मक प्रशिक्षण और अनुसंधान कार्यक्रमों को बढ़ावा देता है।

डीआरडीई और भारत बायोटेक इंटरनेशनल लिमिटेड के बीच समझौता ज्ञापन

रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (डीआरडीई), ग्वालियर, तथा भारत बायोटेक इंटरनेशनल लिमिटेड (BBIL), हैदराबाद ने भारत की जैव रक्षा तैयारियों और सार्वजनिक स्वास्थ्य लचीलेपन को मजबूत करने के उद्देश्य से टीकों और चिकित्सीय एंटीबॉडी के उन्नत अनुसंधान एवं विकास पर सहयोग करने के लिए 6 अक्टूबर 2025 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। डॉ मनमोहन परिदा, ओएस एवं निदेशक, डीआरडीई, तथा डॉ कृष्ण मोहन, पूर्णकालिक निदेशक, BBIL ने डॉ यू के सिंह, डीएस एवं डीजी (एसएसएस), तथा डॉ कृष्णा एला, कार्यकारी अध्यक्ष, BBIL की उपस्थिति में एमओयू का आदान–प्रदान किया। इस साझेदारी के तहत, डीआरडीई और BBIL संयुक्त रूप से एमपॉक्स और निपाह टीकों के विकास पर अनुसंधान एवं विकास को आगे बढ़ाएंगे, एक–दूसरे की सुविधाओं पर प्रशिक्षण का आदान–प्रदान करेंगे समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के दौरान, दोनों समूहों ने अन्य महत्वपूर्ण और नए स्वास्थ्य खतरों के लिए त्वरित प्रतिक्रिया वैक्सीन प्रणाली बनाने के साथ–साथ खतरनाक विषाक्त पदार्थों और वायरल या जीवाणु खतरों के लिए चिकित्सीय मोनोक्लोनल एंटीबॉडी बनाने पर भी चर्चा की।

एचईएमआरएल में एकीकृत एनडीई कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन

27 सितंबर 2025 को, उच्च ऊर्जा सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल) ने एकीकृत गैर–विनाशकारी मूल्यांकन परिसर (INDEC) के उद्घाटन के साथ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। INDEC अपनी तरह की पहली सुविधा है जो उच्च ऊर्जा सामग्री और संबंधित प्रणालियों के गैर–विनाशकारी मूल्यांकन (एनडीई) के लिए एनडीई तकनीकों की एक व्यापक श्रृंखला को एक ही छत के नीचे लाती है, जिसमें एचडी 1.1 और एचडी 1.3 दोनों श्रेणियों की विस्फोटक प्रणालियों के एनडीई करने की क्षमता है।

इस कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने प्रोफेसर प्रतीक किशोर, डीएस एवं डीजी (एसीई), डॉ चंद्रिका कौशिक, डीजी (पीसी एंड एसआई), डॉ मनु कोरुल्ला, डीजी (आर एंड एम) तथा डॉ एपी दाश, ओएस एवं निदेशक, एचईएमआरएल की उपस्थिति में किया। उद्घाटन समारोह के दौरान डीसीडब्ल्यूई के निदेशक डॉ बी चौबे तथा सीसीई (डब्ल्यू) टीम भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में उद्योग विकास भागीदारों और डीआरडीओ तथा अन्य प्रयोगशालाओं के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर बोलते हुए, डॉ एस वी कामत ने डीआरडीओ द्वारा विकसित महत्वपूर्ण प्रणालियों और एयरोस्पेस तथा रक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सुरक्षा, विश्वसनीयता और गुणवत्ता आश्वासन सुनिश्चित करने में एनडीई के महत्व पर प्रकाश डाला।

बिकाश घोष, वैज्ञानिक 'जी' एवं परियोजना निदेशक, INDEC तथा एचईएमआरएल के प्रौद्योगिकी निदेशक (गुणवत्ता) श्री सी गुरुराजा राव ने सुविधा की प्रमुख क्षमताओं पर प्रकाश डाला, जो उच्च ऊर्जा प्रणालियों के महत्वपूर्ण निरीक्षण में सहायक होगी। डॉ घोष ने आगे बताया कि आने वाले महीनों में यह परिसर रेडियोग्राफी, अल्ट्रासोनिक, थर्मोग्राफी, माइक्रोवेव और डिजिटल/AI–सक्षम स्वचालित और स्मार्ट एनडीई प्रणालियों के लिए अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होगा। इन क्षमताओं के साथ, यह परिसर अनुसंधान, प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी विकास, और उद्योग सहयोग के लिए एक राष्ट्रीय केंद्र के रूप में कार्य करेगा, जिससे पारंपरिक और अगली पीढ़ी के निरीक्षण विधियों दोनों में प्रगति हो सकेगी। यह भी बताया गया कि इस परिसर में तीन एकीकृत विकिरण खण्ड होंगे जिनमें 7/11/15 MeV ऊर्जा वाला भारत का पहला त्रि–ऊर्जा औद्योगिक LINAC, 2/6 MeV LINAC ऊर्जा वाला एक द्वि–ऊर्जा LINAC और एकाधिक मोटर रेडियोग्राफी क्षमताओं वाला 450 kV एक्स–रे सिस्टम होगा। एचईएमआरएल देश का एकमात्र ऐसा केंद्र बन जाएगा जिसके पास नैनो फोकस एक्स–रे से लेकर 15 MeV LINAC एक्स–रे तक डिजिटल एक्स–रे और वॉल्यूमेट्रिक सीटी की अनूठी क्षमताएँ होंगी, जो सभी घटकों के गहन निरीक्षण के लिए एक्स–रे ऊर्जा के पूरे स्पेक्ट्रम को शामिल करेंगी। कंटूर फॉलोइंग एल्गोरिथम युक्त रोबोट आधारित स्वचालित अल्ट्रासोनिक प्रणाली, उच्च क्षीणन सामग्री के निरीक्षण के लिए एकॉस्टो– अल्ट्रासोनिक प्रणाली के साथ–साथ अल्ट्रासोनिक निरीक्षण की क्षमता को बढ़ाएगी।

डॉ कामत ने कहा कि यह नई सुविधा न केवल स्वदेशी प्रौद्योगिकी विकास को गति प्रदान करेगी, बल्कि उद्योग और शिक्षा जगत के साथ साझेदारी को भी बढ़ावा देगी। उन्होंने आगे कहा कि एकीकृत एनडीई कॉम्प्लेक्स (INDEC) कुशल जनशक्ति के निर्माण और भारत के रणनीतिक कार्यक्रमों एवं औद्योगिक विकास के लिए नवीन समाधान प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

स्वार्म लोइटरिंग म्यूनिशन यूएवी (SLMUAV)

मानवरहित हवाई वाहन (यूएवी) सशस्त्र बलों के बीच व्यापक रुचि आकर्षित कर रहे हैं। आत्मघाती ड्रोन अपनी कम लागत, अपेक्षाकृत कम तैनाती समय और बहुत कम मानव संसाधन की आवश्यकता के कारण युद्ध में हालिया चलन बन रहे हैं। लोइटरिंग म्यूनिशंस में लक्ष्य की पहचान करने की लंबी क्षमता और पुनः प्रयोज्यता होती है, जिससे कम लागत में हमले की क्षमता बढ़ जाती है। लोइटरिंग म्यूनिशंस एक प्रकार का मानवरहित हवाई वाहन है जिसे विस्फोटक वारहेड के साथ दृष्टि रेखा से परे जमीनी लक्ष्यों पर हमला करने के लिए डिजाइन किया गया है। लोइटरिंग म्यूनिशंस अक्सर पोर्टेबल होते हैं और अधिकतर का उद्देश्य पैदल सेना जैसी जमीनी इकाइयों को निर्देशित सटीक म्यूनिशंस प्रदान करना होता है। ये उच्च–रिजॉल्यूशन वाले इलेक्ट्रो–ऑप्टिकल और इन्फ्रारेड कैमरों से लैस होते हैं जो उपयोगकर्ता को वाहन की पहचान करने, उसका पता लगाने, और लक्ष्य तक पहुँचाने में सक्षम बनाते हैं। लोइटरिंग म्यूनिशंस की एक विशिष्ट विशेषता हमला करने से पहले लंबे समय तक हवा में ''लोइटर'' करने की क्षमता है, जिससे उपयोगकर्ता को यह तय करने का समय मिल जाता है कि कब और किस पर हमला करना है।

स्वार्म लोइटरिंग म्यूनिशन यूएवी (SLMUAV) का कार्य लोइटरिंग म्यूनिशन तकनीक विकसित और प्रदर्शित करना है जो भविष्य में ISR, आक्रमण, और संरचना क्षमताओं के साथ युद्ध की प्रवृत्ति को बदल देगी। SLMUAV में वर्टिकल टेक–ऑफ और लैंडिंग (VTOL) क्षमता है। यूएवी को वांछित क्षेत्र में पहुँचकर उस क्षेत्र में मँडराते हुए, लक्ष्य की पहचान करके और सेल्फ–डिस्ट्रक्शन द्वारा लक्ष्य पर प्रहार करना होता है। यूएवी प्रणाली में संरचना में उड़ान भरने की क्षमता है। हमले के लिए लक्ष्य यूएवी संचालक द्वारा निर्धारित किया जाएगा। विकसित तकनीक का उपयोग निकट भविष्य में युद्धक्षेत्र में SLMUAV के संचालन को साकार करने के लिए किया जा सकता है।

(वैमानिकी विकास स्थापना (एडीई))

वार्षिक दिवस समारोह

एएसएल, हैदराबाद

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एएसएल), हैदराबाद ने 29 सितंबर 2025 को अपना 24वां वार्षिक दिवस मनाया। श्री यू राजा बाबू, डीएस एवं डीजी (एमएसएस), इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

डॉ अनिल कुमार, ओएस एवं अध्यक्ष, आयोजन समिति ने उपस्थित सभी गणमान्य लोगों का स्वागत किया। डॉ गौरी शंकर डब्ल्यू, वैज्ञानिक 'जी' एवं निदेशक, प्रबंधन सेवाएँ, ने एएसएल की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ जी ए श्रीनिवास मूर्ति, डीएस एवं निदेशक, एएसएल ने अपने संबोधन में अग्नि–प्राइम मिसाइल के सफल रेल प्रक्षेपण के लिए एएसएल के समस्त सदस्यों को बधाई दी, जिसने सामरिक मिसाइल प्रौद्योगिकी में एक नए युग की शुरुआत की है। उन्होंने विभिन्न उपलब्धियों और मील के पत्थरों, विशेष रूप से उच्च–तापमान सामग्री जैसी प्रौद्योगिकी विकास पर प्रकाश डाला और आने वाले वर्षों के लिए प्रयोगशाला के लक्ष्यों को भी सामने रखा।

मुख्य अतिथि, श्री राजा बाबू ने एएसएल समुदाय को बधाई दी और देश को गौरवान्वित करने के लिए एएसएल द्वारा किए गए प्रभावी एवं कुशल कार्यों की सराहना की। उन्होंने रणनीतिक कार्यक्रम में उनके योगदान के लिए स्वर्गीय डॉ आर एन अग्रवाल को याद किया। उन्होंने लंबी दूरी की सामरिक मिसाइलों पर काम करने का सुझाव भी दिया।

20, 25, 30, और 35 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले कर्मचारियों को प्रयोगशाला–स्तरीय प्रशस्ति प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए। एएसएल ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें आंतरिक

प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया गया। श्री डी रमजा नायक, वैज्ञानिक 'एफ' ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डीएमएसआरडीई, कानपुर

रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान और विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर ने 6 सितंबर 2025 को अपना 49वां स्थापना दिवस मनाया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडीआरएंडडी एवं अध्यक्ष डीआरडीओ तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डीएस एंड डीजी (एनएसएंडएम), डॉ आरवी हारा प्रसाद तथा डॉ मयंक द्विवेदी, ओएस एंड डीजी (एचआर) उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ हुई, इसके बाद मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, तथा आमंत्रित अतिथियों ने वृक्षारोपण किया। डीएमएसआरडीई के ओएस एवं निदेशक डॉ किंगसुक मुखोपाध्याय ने अपने संबोधन में पिछले वर्ष की उपलब्धियों, हासिल किए गए मील के पत्थर और चल रही परियोजना गतिविधियों की प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अग्रणी बनने और 2047 तक भारत को एक विकसित अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए आवश्यक चार प्रमुख स्तंभों पर भी चर्चा की। सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने समारोह में चार चांद लगा दिए। मुख्य अतिथि ने इस अवसर पर 18 अधिकारियों और कर्मचारियों को पदक एवं प्रशस्ति प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम से पहले, टीम भावना को बेहतर बनाने और उत्साही प्रतिस्पर्धा का माहौल बनाने के लिए डीएमएसआरडीई कर्मचारियों के बीच शतरंज, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, कैरम, ब्रिस्क वॉक, और स्लो साइकिलिंग जैसी विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट

अतिथि द्वारा डीएमएसआरडीई गृह पत्रिका 'नवचिंतन' के 28वें संस्करण (तकनीकी) का उद्घाटन भी किया गया। आयोजन समिति के सह निदेशक एवं अध्यक्ष डॉ जे एन श्रीवास्तव ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

ईसा, दिल्ली

पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली ने 19 सितंबर 2025 को अपना 66वां स्थापना दिवस मनाया। एयर मार्शल आशुतोष दीक्षित, एवीएसएम, वीएम, वीएसएम, सीआईएससी ने इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में तथा श्रीमती सुमा वर्गीस, डीएस एवं डीजी (मेड, सीओएस एवं सीएस) ने सम्मानित अतिथि के रूप में शिरकत की। इस अवसर पर, ईसा द्वारा विकसित छह तकनीकी अध्ययन और तीन उत्पाद, अर्थात् SAMAR 3.0, कॉर्प्स एयरस्पेस मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर (CAMS)– नभरक्षक और इलेक्ट्रॉनिक पायलट के लिए सिमुलेशन टेस्ट बेड (STEM), औपचारिक रूप से उपयोगकर्ताओं को सौंपे गए, जो उत्कृष्टता और नवाचार के लिए चल रही प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। इस अवसर पर प्रतिष्ठित कर्मचारियों को संगठन में उनके उत्कृष्ट

योगदान और समर्पण के लिए निदेशक के प्रशंसा पुरस्कार की प्रस्तुति भी की गई। मुख्य अतिथि ने उत्पाद जीवन चक्र में सिस्टम विश्लेषण की भूमिका और क्यूआर निर्माण में इसकी परिकल्पित भूमिका पर प्रकाश डाला।

डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम की जयंती समारोह

नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल), विशाखापत्तनम ने 15 अक्टूबर 2025 को भारत रत्न एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम की 94वीं जयंती के अवसर पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया। डॉ अब्राहम वर्गीस, ओएस एवं निदेशक, एनएसटीएल इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। डॉ एच एन दास, ओएस एवं अध्यक्ष कार्य समिति ने डॉ कलाम की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और डीआरडीओ तथा एनएसटीएल के साथ उनके जुड़ाव को याद किया। एनएसटीएल सीई यूनियन के अध्यक्ष श्री ए सुनील; कार्य समिति के सचिव श्री जी नागभूषणम; कार्य समिति के उपाध्यक्ष श्री सी एच प्रसन्ना कुमार; एनएसटीएल के वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों तथा एनएसटीएल सिविल कर्मचारी संघ एवं कार्य समिति के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और उन महान दूरदर्शी एवं जनता के राष्ट्रपति को पुष्पांजलि अर्पित की।

महात्मा गांधी जयंती तथा लाल बहादुर शास्त्री जयंती समारोह

नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल), विशाखापत्तनम ने 2 अक्टूबर 2024 को 156वीं महात्मा गांधी जयंती और 121वीं लाल बहादुर शास्त्री जयंती बड़े ही भव्य तरीके से मनाई। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ अब्राहम वर्गीस, ओएस एवं निदेशक; डॉ एच एन दास; तथा श्रीमती डॉ राजेश्वरी देवी द्वारा महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री के चित्रों पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि के साथ हुई। डॉ वर्गीस ने हमें याद दिलाया कि कैसे महात्मा गांधी तथा लाल बहादुर शास्त्री ने संघर्ष किया और भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से मुक्त कराने में सफल रहे। उन्होंने सभी को गांधीजी द्वारा लिखी गई पुस्तकों को पढ़ने का सुझाव दिया। साथ ही, उन्होंने कहा कि लाल बहादुर शास्त्री गांधीवादी सिद्धांतों और सरल जीवन शैली का पालन करने वाले सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों में से एक हैं, तथा शास्त्री विनम्र शुरुआत से उठे और कृषि एवं डेयरी क्रांति को बढ़ावा देकर एक सम्मानित राष्ट्रीय नेता बन गए। उन्होंने स्कूली बच्चों को गांधीजी तथा लाल बहादुर शास्त्री की सच्चाई, ईमानदारी और सादगी के गुणों को विकसित करने की सलाह दी।

डीएमएसआरडीई में विश्वकर्मा पूजा समारोह

रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर ने 17 सितंबर 2025 को श्री विश्वकर्मा पूजा पुर्ण श्रद्धा के साथ मनाई। इस पावन अवसर पर, डीएमएसआरडीई के प्रिंटिंग प्रेस में भगवान विश्वकर्मा, जिन्हें विश्व के मुख्य शिल्पी या दिव्य वास्तुकार के रूप में जाना जाता है, का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए एक केंद्रीय पूजा का आयोजन किया गया। डीएमएसआरडीई के सह निदेशक डॉ जे एन श्रीवास्तव ने डीएमएसआरडीई के समस्त कर्मचारियों के साथ हवन किया। पूजा के बाद प्रसाद वितरित किया गया। यह उत्सव कारखानों, उद्योगों और कार्यशालाओं में भगवान विश्वकर्मा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए मनाया जाता है। इस कार्यक्रम का संचालन श्री अमित सरैया, वैज्ञानिक 'एफ' तथा डॉ मोहित कटियार, वैज्ञानिक 'ई' ने किया।

स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम

डीईएएल, देहरादून

स्वच्छता ही सेवा (एसएचएस–2025) माननीय प्रधानमंत्री द्वारा स्वच्छता को ''सबका दायित्व'' बनाने हेतु परिकल्पित एक पहल है। इस अभियान का उद्देश्य संस्थान के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच स्वच्छता, स्वास्थ्य, और श्रम की गरिमा के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना था।

देहरादून स्थित रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डीईएएल) ने भी एसएचएस 2025 कार्यक्रम मनाया और स्वैच्छिक श्रमदान तथा ''एक दिन, एक घंटा, एक साथ'' जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया। सभी सफाई मित्रों के लिए एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया और एक प्रतिष्ठित पैथोलॉजी प्रयोगशाला द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। डीईएएल कॉलोनी में प्रभात फेरी का भी आयोजन किया गया, जिसमें कई कर्मचारियों और उनके बच्चों ने भाग लिया। डीईएएल के निदेशक श्री मनोज कुमार ढाका ने डीईएएल के कर्मचारियों के साथ कार्यक्रम का नेतृत्व किया।

इनमास, दिल्ली

नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली ने 17 सितंबर 2025 से 2 अक्टूबर 2025 के दौरान राष्ट्रव्यापी स्वच्छता एसएचएस 2025 अभियान में भाग लिया। उद्घाटन के दिन, डॉ सुधीर चांदना, ओएस एवं निदेशक इनमास ने संस्थान के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को स्वच्छता को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया, स्वच्छता बनाए रखने और पर्यावरण की सुरक्षा के महत्व पर बल दिया। डॉ देव व्रत कंबोज, वैज्ञानिक 'जी' एवं सह निदेशक भी कार्यक्रमों के दौरान उपस्थित थे। समारोह के एक भाग के रूप में, कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। एक विशेष स्वच्छता अभियान और परिसर के भीतर स्वच्छता लक्ष्य इकाइयों (CTU) की पहचान की गयी।

एक दिन, एक घंटा, एक साथ श्रमदान कार्यक्रम के तहत एक स्वच्छता रैली का आयोजन किया गया। ''बेस्ट आउट ऑफ द वेस्ट'' प्रतियोगिता का आयोजन ''रिड्यूस, रीयूज, और रीसाइकल'' के संदेश को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया था। इनमास में 45 सफाई मित्रों और उनके आश्रितों (41 पुरुष और 4 महिलाएं) की निवारक स्वास्थ्य जांच आयोजित की गई।

एमटीआरडीसी, बेंगलुरु

स्वच्छता महोत्सव 2025 के एक भाग के रूप में, सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी), बेंगलुरु के सफाई कर्मचारियों के लिए 25 सितंबर 2025 को एक निवारक स्वास्थ्य जांच कार्यक्रम आयोजित किया गया। जे बी डायग्नोस्टिक, विद्यारण्यपुरा के 6 डॉक्टरों और तकनीशियनों की एक टीम ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और 38 प्रतिभागियों से नमूने एकत्र किए गए। प्रयोगशाला में 23 सितंबर 2025 को एक स्वच्छता अभियान भी चलाया गया और एक रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई। एक स्वच्छता दौड़ का भी आयोजन किया गया जिसमें प्रयोगशाला के सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

एनपीओएल, कोच्चि

नौसेना भौतिक एवं समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि ने 17 सितंबर 2025 से 2 अक्टूबर 2025 के दौरान ''स्वच्छोत्सव'' का आयोजन किया। अभियान के तहत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। डॉ महेश्वरन के नेतृत्व में भारतीय मत्स्य सर्वेक्षण (एफएसआई), कोच्चि के एक मैत्रीपूर्ण दौरे ने संस्थागत सहयोग और साझा पर्यावरणीय जिम्मेदारी को बढ़ावा दिया। निदेशक (प्रबंधन) श्री के मोहनन के नेतृत्व में ''एक दिन, एक घंटा, एक साथ'' विषय के साथ बड़े पैमाने पर वॉकथॉन का आयोजन किया, जिसमें लगभग 200 प्रतिभागियों ने मार्ग से प्लास्टिक कचरा एकत्र किया। सफाई मित्रों के लिए एक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया, जिससे 83 कर्मचारी लाभान्वित हुए। लेफ्टिनेंट कमांडर अंकित सुरानी, एनपीओएल चिकित्सा अधिकारी तथा को–ऑपरेटिव अस्पताल, त्रिक्काकरा की एक टीम द्वारा संचालित इस पहल ने कार्यस्थल की स्वच्छता बनाए रखने में सफाई कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता दी। डॉ दुव्वुरी शेषागिरी, ओएस एवं निदेशक, एनपीओएल ने स्वच्छता शपथ दिलाकर कार्यक्रमों की श्रृंखला का औपचारिक उद्घाटन किया। डॉ महेश्वरन पी ए, वैज्ञानिक 'एफ' एनपीओएल में स्वच्छता ही सेवा समारोह के नोडल अधिकारी थे।

एनएसटीएल, विशाखापत्तनम

नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल), विशाखापत्तनम में 17 सितंबर 2025 से 2 अक्टूबर 2025 तक एसएचएस 2025 मनाया गया। डॉ अब्राहम वर्गीस, ओएस एवं निदेशक एनएसटीएल, तथा डॉ एच एन दास, वैज्ञानिक 'एच' एवं अध्यक्ष कार्य समिति ने सभी कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों से अनुरोध किया कि वे चल रही स्वच्छता गतिविधियों में स्वेच्छा से भाग लें। स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए, एनएसटीएल ने ''एक दिन, एक घंटा, एक साथ'' कार्यक्रम के अंतर्गत श्रमदान और सफाई अभियान का आयोजन किया तथा एक घंटे का सफाई अभियान चलाया। 150 से अधिक लोगों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया एवं स्कूल, ट्राइडेंट, अस्पताल, और एनएसटीएल परिसर के बाहर विभिन्न स्थानों की सफाई की।

सफाई कर्मचारियों और उनके परिवारों में जागरूकता पैदा करने के लिए, एनएसटीएल ने सफाई मित्र सुरक्षा शिविर एवं निवारक स्वास्थ्य जाँच का आयोजन किया। सफाई कर्मचारियों को पीपीई किट वितरित किए गए और उन्हें व्यावसायिक खतरों से खुद को बचाने के तरीके बताए गए। इसके अलावा, एनएसटीएल तकनीकी क्षेत्र में पाँच स्थलों तथा आवासीय क्षेत्र में पाँच स्थलों को संपूर्ण स्वच्छता लक्ष्य इकाइयों के रूप में चिह्नित किया गया और जमा हुए कचरे को प्रभावी ढंग से हटाया गया। इसके अलावा, स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए, सफाई मित्रों का सम्मान, रंगोली प्रतियोगिताओं के लिए पुरस्कार, और सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले स्वयंसेवकों को सम्मानित करने जैसी गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

सीएबीएस में एईडब्लू एंड सी जीईएस ऑपरेटर एवं रखरखाव पर पाठ्यक्रम

9–11 सितंबर 2025 के दौरान वायुवाहित प्रणाली केंद्र (सीएबीएस), बेंगलुरु में भारतीय वायु सेना के लिए 'एईडब्लू एंड सी ग्राउंड एक्सप्लॉइटेशन सिस्टम (जीईएस) ऑपरेटर एवं रखरखाव' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। पाठ्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ के राजलक्ष्मी मेनन, एफएनएई, डीएस एवं डीजी (एयरो) ने विशिष्ट अतिथि श्रीमती सांथ्या, ओएस एवं निदेशक, सीएबीएस, तथा ग्रुप कैप्टन आर वरदराजन (सेवानिवृत्त), वैज्ञानिक 'जी', पाठ्यक्रम निदेशक की उपस्थिति में किया। प्रशिक्षण के एक भाग के रूप में, सैद्धांतिक कक्षाएं आयोजित की गईं और 58SU, AFS, चिमनी हिल्स में जीईएस संचालन एवं रखरखाव पहलुओं पर एक व्यावहारिक सत्र आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण सीएबीएस, बीईएल, और ईसीआईएल के विशेषज्ञों द्वारा प्रदान किया गया।

इस प्रशिक्षण में भारतीय वायु सेना के कुल 30 प्रतिभागियों और इंजीनियरिंग लाइफसाइकल सपोर्ट एजेंसी, बीईएल, बैंगलोर के 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस पाठ्यक्रम में विषय का व्यापक कवरेज प्रदान किया गया और सीएबीएस द्वारा विकसित एईडब्ल्यू एंड सी जीईएस प्रणाली के बारे में उपयोगी जानकारी दी गई।

डिपास में मयूरपंख पर प्रशिक्षण

सॉफ्टवेयर दक्षता बढ़ाने और पेशेवर कौशल को मजबूत करने के उद्देश्य से, श्री देवकांत पहाड़ सिंह, ओएस एवं निदेशक, डिपास के मार्गदर्शन तथा डॉ एम एस पाल वैज्ञानिक 'जी', एडी एडमिन की देखरेख में 15–17 सितंबर 2025 के दौरान तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, ''मयूरपंख'' आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम मुख्य अतिथि डॉ सोमनाथ सिंह, वैज्ञानिक जी द्वारा संबोधित उद्घाटन सत्र के साथ शुरू हुआ। श्रीमती गुरप्रीत कौर, वैज्ञानिक 'एफ' के नेतृत्व में मयूरपंख टीम, आर एंड डी (ई), पुणे द्वारा संचालित तकनीकी सत्रों में पेरोल, आयकर, बकाया, सेवानिवृत्ति लाभ, एलटीसी, वेतन निर्धारण, चिकित्सा एवं टेलीफोन बिल्स, टीए/डीए, उपस्थिति

विश्लेषण एवं एकीकृत बजट प्रबंधन प्रणाली (IBMS) जैसे मॉड्यूल पर व्यापक व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। दोनों गणमान्यों ने प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी की सराहना की और कार्यक्रम के सफल संचालन की सराहना की।

प्रशिक्षण में डिपास , डीआईपीआर, और डीआईबीईआर (डीआईपीएएस प्रकोष्ठ) के कुल 51 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्रीमती दीप्ति अमेरा, एसएओ पाठ्यक्रम निदेशक तथा श्री विक्रम तुशीर, एए 'बी' पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

डीआरएल में एनपीएस तथा यूपीएस पर कार्यशाला

24 सितंबर 2025 को रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरएल), तेजपुर में राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) तथा एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। व्याख्यान श्री अभय शंकर सुमन, सहायक लेखा अधिकारी ने दिया। वक्ता ने इस बात पर विशेष बल दिया कि कैसे एनपीएस तथा यूपीएस दोनों दीर्घकालिक वित्तीय सुरक्षा प्रदान करते हैं, प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने समझाया: एनपीएस बाजार से जुड़ी वृद्धि, निवेश में लचीलापन और उच्च रिटर्न की क्षमता प्रदान करता है, जबकि यूपीएस गारंटीकृत पेंशन लाभ और सेवानिवृति पर एक अतिरिक्त एकमुश्त राशि प्रदान करता है। एनपीएस तथा यूपीएस दोनों योगदान और निवेश विकल्पों में लचीलापन प्रदान करते हैं। ग्राहक अपने निवेश को फंड मैनेजरों या परिसंपत्ति वर्गों के बीच आसानी से स्थानांतरित कर सकते हैं, जिससे बाजार की स्थितियों और व्यक्तिगत जोखिम लेने की क्षमता के अनुसार इष्टतम वृद्धि सुनिश्चित होती है। इस सत्र में डीआरएल, डीजीआरई, ईएमयू, पीएमयू के कर्मचारियों और वित्तीय पेशेवरों ने भाग लिया। कार्यशाला का समापन एक संवादात्मक सत्र के साथ हुआ, जिसमें एनपीएस तथा यूपीएस पर व्यावहारिक जानकारी दी गई ताकि प्रतिभागियों को अपनी सेवानिवृत्ति योजना के बारे में बेहतर निर्णय लेने में मदद मिल सके।

आईटीएम में MITRA 5.1 पर पाठ्यक्रम

मसूरी स्थित प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम) द्वारा नव–पदोन्नत वैज्ञानिक 'डी' के लिए 1–26 सितंबर 2025 के दौरान मध्य–कैरियर प्रशिक्षण संवर्धन (MITRA 5.1) पर एक पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। डीआरडीओ और सशस्त्र बल चयन बोर्डों की 30 विभिन्न प्रयोगशालाओं के 48 प्रतिभागियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य नव–पदोन्नत वैज्ञानिक 'डी' को परियोजना प्रबंधन, प्रौद्योगिकी प्रबंधन, सामग्री प्रबंधन, समूह गतिशीलता एवं टीम निर्माण, प्रयोगों की रूपरेखा, नए उत्पाद विकास, और डीआरडीओ के विभिन्न कॉर्पोरेट कार्यों से परिचित कराना था।

इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ मयंक द्विवेदी, ओएस एवं महानिदेशक (मानव संसाधन) ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से तथा आईटीएम के निदेशक श्री एस पी डोभाल ने किया। मुख्य अतिथि ने प्रबंधन कौशल को अद्यतन करने और उच्चतर जिम्मेदारियों में प्रभावी प्रदर्शन हेतु विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करने हेतु मध्य–कैरियर प्रशिक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। आईटीएम के निदेशक ने नई डीआरडीओ प्रशिक्षण नीति में मित्रा पाठ्यक्रम के महत्व पर विचार–विमर्श किया और प्रतिभागियों से प्रशिक्षण का पूरा लाभ उठाने और सत्रों के दौरान संकाय सदस्यों के साथ खुलकर बातचीत करने का आग्रह किया।

सुश्री सुमा वर्गीस, डीएस एवं डीजी (एमईडी एवं सीओएस), मुख्य अतिथि थीं। उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पाठ्यक्रम प्रतिभागियों से बातचीत की और पाठ्यक्रम पर उनके विचार प्राप्त किए। पाठ्यक्रम निदेशक श्री अनुज कुमार, वैज्ञानिक 'बी' के धन्यवाद ज्ञापन के साथ पाठ्यक्रम का समापन हुआ।

एमटीआरडीसी में उच्च शक्ति माइक्रोवेव स्रोतों पर पाठ्यक्रम

सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी), बेंगलुरु ने 15–17 सितंबर 2025 के दौरान ''उच्च शक्ति वाले सूक्ष्म तरंग स्रोतों'' पर एक विशिष्ट प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया। सियोल राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रो0 गन–सिक पार्क इस पाठ्यक्रम के संकाय सदस्य थे। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य उच्च शक्ति वाले सूक्ष्म तरंग (एचपीएम) स्रोतों और प्रणालियों का गहन ज्ञान एवं व्यावहारिक समझ प्रदान करना था, जिसमें रिलेटिविस्टिक बैकवर्ड वेव ऑसिलेटर्स (RBWOs), मैग्नेटिकली इंसुलेटेड लाइनर ऑसिलेटर्स (MILOs), और सहायक तकनीकों पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस पाठ्यक्रम में कुल 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस पाठ्यक्रम को इसकी अकादमिक गहनता, व्यावहारिक प्रासंगिकता और वैश्विक विशेषज्ञता के प्रदर्शन के लिए व्यापक रूप से सराहा गया। प्रतिभागियों ने विश्वास व्यक्त किया कि अर्जित कौशल और ज्ञान उनके संबंधित कार्यों में अनुसंधान, नवाचार, और तकनीकी प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

एमटीआरडीसी में के यू लिमाये स्मृति व्याख्यान

सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी), बेंगलुरु ने 25 सितंबर 2025 को 17वां के यू लिमाये स्मृति व्याख्यान आयोजित किया। डॉ मयंक द्विवेदी, ओएस एवं महानिदेशक (मानव संसाधन) इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं वक्ता थे। उन्होंने 'उन्नत प्रौद्योगिकियों को आकार देने वाली सामग्रियाँ' विषय पर व्याख्यान दिया।

एनपीओएल में अंतर्जलीय संवेदन के लिए ऑप्टिकल तकनीकों पर पाठ्यक्रम

नौसेना भौतिक एवं समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि ने 22–24 सितंबर 2025 के दौरान ''अंतर्जलीय संवेदन हेतु ऑप्टिकल तकनीकें'' विषय पर एक सतत शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों और शिक्षा जगत व उद्योगों के विशेषज्ञों को एक साथ लाना था ताकि ऑप्टिकल–फाइबर तकनीकों की प्रगति पर बुनियादी और अत्याधुनिक शोध प्रस्तुत किया जा सके, जिसमें अंतर्जलीय संवेदन के लिए इन तकनीकों के उपयोग पर जोर दिया गया। डॉ दुव्वुरी शेषागिरी, वैज्ञानिक 'एच' एवं निदेशक, एनपीओएल ने इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। मुख्य संबोधन प्रो0 एस अशोकन, आईआईएससी, बैंगलोर ने 'फाइबर ऑप्टिक हाइड्रोफोन्स का विकास' पर दिया। एनपीओएल के अधिकारियों सहित विभिन्न डीआरडीओ प्रयोगशालाओं से 33 प्रतिभागी शामिल हुए।

आईआईटी, आईआईएससी, सीएसआईओ, सीजीसीआरआई, सीयूएसएटी, उद्योगों, और डीआरडीओ की अन्य प्रयोगशालाओं जैसे प्रमुख अनुसंधान एवं विकास तथा शैक्षणिक संस्थानों से वक्ताओं को आमंत्रित किया गया। पाठ्यक्रम में शामिल विषयों में FBG सेंसिंग उपकरण एवं तकनीकें, समुद्र विज्ञान संबंधी अनुप्रयोगों के लिए LIDAR, अंतर्जलीय अनुप्रयोगों के लिए क्वांटम सेंसर, CMUT सेंसर, अंतर्जलीय लेजर संचार, अंतर्जलीय ऑप्टिकल वायरलेस संचार, वितरित ध्वनिक संवेदन, और घुसपैठ का पता लगाने के लिए अंतर्जलीय ऑप्टिकल फाइबर–आधारित वितरित संवेदन जैसे प्रासंगिक विषय शामिल थे। डॉ श्रीहरि सी वी, वैज्ञानिक 'एफ' पाठ्यक्रम निदेशक थे।

आरसीएमए (कोरापुट) में एयरो-इंजन पर तकनीकी-प्रबंधकीय बैठक

आरसीएमए कोरापुट, सुनाबेडा में 'गैस टरबाइन इंजनों के एयरवर्थनेस प्रमाणन में भविष्य की चुनौतियां' विषय पर एक तकनीकी–प्रबंधकीय बैठक आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में आधुनिक एयरो–इंजनों की एयरवर्थनेस और प्रमाणन में चुनौतियों का समाधान करने के लिए सैन्य उड़ान योग्यता और प्रमाणन केंद्र (सेमिलैक) तथा एचएएल ईंजन डिवीजन, कोरापुट के ईंजन विशेषज्ञ एक साथ आए।

बैठक की शुरुआत सेमिलैक के

ओएस एवं निदेशक (प्रणोदन) श्री एल एन राघवेंद्र के उद्घाटन संबोधन से हुई, जिसमें उन्होंने वायु–इंजनों में भविष्य की उड़ान–योग्यता संबंधी चुनौतियों के समाधान हेतु एक सहयोगात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दिया। इस बैठक ने भविष्य के एयरो–इंजनों के डिजाइन और विकास पर व्यापक विचार–विमर्श और विचारों के आदान–प्रदान के लिए एक सामयिक और महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया। सेमिलैक के वैज्ञानिकों द्वारा लिखे गए तकनीकी पत्रों की एक संकलन पत्रिका भी प्रकाशित की गई, जिसमें इंजनों के तकनीकी जीवन विस्तार, इंजन घटकों के स्वदेशीकरण और अन्य महत्वपूर्ण विषयों के लिए दिशानिर्देश और कार्यप्रणाली शामिल हैं।

बैठक का एक प्रमुख केंद्र गैस टरबाइन ईंजनों का जीवनकाल विस्तार था, जहाँ सेमिलैक के वैज्ञानिकों ने बहुमूल्य अंतर्दृष्टि और वैज्ञानिक अध्ययन प्रदान किए, साथ ही तकनीकी प्रगति पर भी प्रकाश डाला जिससे हवाई ईंजनों का जीवनकाल विश्वसनीय रूप से बढ़ाया जा सके और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा सके। सुखोई ईंजन डिवीजन, HAL, कोरापुट में रूसी ईंजनों के परिष्कृत ओवरहाल और विनिर्माण सुविधाओं का अवलोकन इस बैठक का मुख्य आकर्षण और ज्ञान के आदान–प्रदान का एक सुनहरा अवसर था।

डीएमआरएल में टाइटेनियम मिश्र धातु पर पाठ्यक्रम

रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद ने 18–22 अगस्त 2025 के दौरान "टाइटेनियम मिश्र धातु: वर्गीकरण, प्रसंस्करण, और अनुप्रयोग" विषय पर एक पाठ्यक्रम का आयोजन किया। पाठ्यक्रम का उद्देश्य टाइटेनियम मिश्र धातुओं– उनके वर्गीकरण, प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों, लक्षण वर्णन और रक्षा, एयरोस्पेस एवं रसायन जैसे उद्योगों में अनुप्रयोगों का गहन ज्ञान प्रदान करना था।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत डॉ एस एन साहू, वैज्ञानिक 'एफ' के स्वागत संबोधन के साथ हुई, जिसके बाद पाठ्यक्रम निदेशक डॉ एस भानुमति, वैज्ञानिक 'एफ' ने पाठ्यक्रम का अवलोकन प्रस्तुत किया। डीएमआरएल के ओएस एवं निदेशक डॉ आर बालामुरलीकृष्णन ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और टाइटेनियम मिश्र धातुओं के बढ़ते रणनीतिक महत्व पर अपने विचार साझा किए। मुख्य अतिथि, आईआईएससी बेंगलुरु के प्रो0 सत्यम सुवास ने ''माय ट्रिस्ट विद टाइटेनियम'' शीर्षक से मुख्य व्याख्यान दिया।

प्रो0 सुवास के व्याख्यान में टाइटेनियम की क्रिस्टल संरचना, बनावट निर्माण, बनावट वाले Ti मिश्र धातुओं के गुण, ड्वेल फटीग और एयरोस्पेस क्षेत्र में उनके अनुप्रयोगों पर चर्चा हुई। उन्होंने प्रतिभागियों को ड्वेल फटीग प्रतिरोध, बीटा–फेज मिश्रधातुओं और एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में नई मिश्रधातुओं की खोज के लिए प्रोत्साहित किया। इस पाठ्यक्रम में डीएमआरएल के पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिकों, डीआरडीएल, एनआईटी दुर्गापुर के संकाय सदस्यों, और संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा दिए गए 16 व्याख्यान शामिल थे। सत्रों में टाइटेनियम धातुकर्म, निष्कर्षण और प्रगलन, ताप–यांत्रिक प्रसंस्करण, फोर्जिंग, एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग, कास्टिंग, हीट ट्रीटमेंट, संयोजन तकनीकें, परीक्षण विधियाँ, एनडीटी, और मॉडल–संचालित मिश्रधातु डिजाइन सहित कई विषयों पर चर्चा हुई।

डीएमआरएल में उच्च-प्रदर्शन सिरेमिक पर पाठ्यक्रम

रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद ने 10–12 सितंबर 2025 के दौरान ''संरचनात्मक और कार्यात्मक अनुप्रयोगों के लिए उच्च–प्रदर्शन सिरेमिक'' विषय पर एक सतत शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र की शुरुआत डॉ एस एन साहू, वैज्ञानिक 'एफ' के स्वागत संबोधन से हुई, जिसके बाद

पाठ्यक्रम निदेशक डॉ सुबीर कुमार रॉय, वैज्ञानिक 'एफ' ने पाठ्यक्रम का अवलोकन किया। डॉ पार्थ घोषाल, वैज्ञानिक 'जी' एवं कार्यवाहक निदेशक ने सभा को संबोधित किया और यह देखते हुए कि सिरेमिक भविष्य के कई अनुप्रयोगों में धातुओं और मिश्र धातुओं को बदलने के लिए तैयार हैं, सिरेमिक के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि, डॉ सी डी मधुसूदना, जीएम, कॉर्पोरेट आरएंडडी, बीएचईएल, हैदराबाद ने आत्मनिर्भर भारत के साथ संरेखित उन्नत सिरेमिक और कंपोजिट विकसित करने में डीएमआरएल के प्रयासों की सराहना की। पाठ्यक्रम में डीएमआरएल के वरिष्ठ वैज्ञानिकों और आरसीआई, एआरसीआई, और आईआईटी हैदराबाद के विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों पर 11 गहन व्याख्यान दिए गए, जिनमें आरएफ पारदर्शी सामग्री और संरचना–गुण संबंधय एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग के माध्यम से सिरेमिक घटक; आधुनिक स्टील्थ प्रौद्योगिकियां; हार्ड सिरेमिक की उन्नत मशीनिंग आदि शामिल थे।

श्री बी रामकृष्ण, वैज्ञानिक 'जी' एवं सह निदेशक, समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य उच्च–प्रदर्शन सिरेमिक के लिए उन्नत प्रसंस्करण तकनीकों और नागरिक एवं रक्षा दोनों क्षेत्रों में उनके अनुप्रयोगों के बारे में ज्ञान साझा करना था।

एनएसटीएल में सतर्कता और सुरक्षा संवेदीकरण कार्यक्रम

नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल), विशाखापत्तनम ने 19 सितंबर 2025 को एक दिवसीय सतर्कता एवं सुरक्षा संवेदीकरण जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। मुख्य सुरक्षा अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल बी पी आचार्य ने सुरक्षा दिशानिर्देशों पर एक व्याख्यान दिया और ऑपरेशन सिंदूर के बाद पीआईओ द्वारा की गई तोड़फोड़ और जासूसी के प्रयासों पर काबू पाने और उन्हें कम करने के लिए एक ठोस रणनीति तैयार करने पर चर्चा की। सुरक्षा अधिकारी अभिषेक कुमार सिंह ने दैनिक जीवन में मोबाइल और इंटरनेट सुरक्षा पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने रक्षा प्रतिष्ठानों द्वारा पालन किए जाने वाले आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम–1923 और साइबर सुरक्षा प्रोटोकॉल पर भी प्रकाश डाला। सभी संविदा कर्मचारियों में सामान्य सुरक्षा चेतना पैदा करने के लिए, सुरक्षा अधिकारी श्री ए विश्वेसर राव ने भौतिक और दस्तावेज सुरक्षा के सभी पहलुओं पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रयोगशाला में क्या करें और क्या न करें, इसकी भी जानकारी दी गई।

डीजीआरई में उपयोगकर्ता संपर्क बैठक-2025

रक्षा भू–सूचना विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीजीआरई), चंडीगढ़ ने 28–29 अगस्त 2025 के दौरान उपयोगकर्ता संपर्क बैठक (यूआईएम–25) का आयोजन किया। यूआईएम–25 का उद्देश्य विभिन्न परिचालन कर्तव्यों के निर्वहन के दौरान उपयोगकर्ताओं के सामने आने वाली महत्वपूर्ण समस्याओं को समझना था। इस बैठक में जोखिम–प्रवण पर्वतीय क्षेत्रों में तैनात विभिन्न उपयोगकर्ताओं ने भाग लिया। सशस्त्र बलों और नागरिक उपयोगकर्ताओं के प्रतिनिधियों ने भी बैठक में भाग लिया।

सैनिक सहायता प्रणाली (एसएसएस) के डीएस एवं डीजी डॉ उपेंद्र कुमार सिंह ने बैठक की अध्यक्षता की। इस कार्यक्रम में चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में भू–सूचना विज्ञान के माध्यम से परिचालन सहायता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान, डीजीआरई ने पर्वतीय क्षेत्रों के लिए अनुकूलित भू–सूचना विज्ञान और भू–खुफिया प्रौद्योगिकियों में अपनी तकनीकी क्षमताओं का प्रदर्शन किया।

व्यावसायिक सेवाओं के साथ संपर्क निदेशालय (डीआईएसबी) तथा कार्यालय महानिदेशक (एसएसएस), डीआरडीओ मुख्यालय के अधिकारी भी उपयोगकर्ता संवाद में शामिल हुए। नागरिक और रक्षा, दोनों ही उपयोगकर्ताओं ने मुख्य निष्कर्षों की समीक्षा की और कार्यान्वयन योग्य सुझावों पर चर्चा की।

डॉ पी के सत्यवली, ओएस एवं निदेशक, ने आश्वासन दिया कि प्रयोगशाला उपयोगकर्ता समूहों की उभरती परिचालन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अत्याधुनिक समाधान प्रदान करती रहेगी।

डीटीटीसी में एयरोस्पेस और रक्षा विनिर्माण के लिए एनडीई तकनीकों पर कार्यक्रम

डीटीटीसी (डीएमएसआरडीई), लखनऊ द्वारा 29–30 सितंबर 2025 के दौरान "एयरोस्पेस और रक्षा विनिर्माण के लिए गैर–विनाशकारी मूल्यांकन तकनीक" विषय पर कौशल विकास कार्यक्रम के तहत दो दिवसीय विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को उद्योगों के पेशेवरों और छात्रों दोनों के लिए अवधारणा–उन्मुख और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया था।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से मैकेनिकल इंजीनियरिंग और भौतिकी विषयों से कुल 21 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। उन्होंने मेसर्स वीएमएस टीएमटी लिमिटेड, मेसर्स अशोक लीलैंड प्राइवेट लिमिटेड, मेसर्स आर्यन एक्सपोर्टर, सीआईपीईटी, लखनऊ विश्वविद्यालय तथा श्री रामस्वरूप कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट जैसे संगठनों का प्रतिनिधित्व किया। सत्र गैर–विनाशकारी मूल्यांकन (NDE) में प्रमाणित विशेषज्ञों द्वारा दिए गए थे। कार्यशाला का उद्घाटन आरडीएसओ, लखनऊ के प्रधान कार्यकारी निदेशक डॉ डी के गौर ने किया, जिन्होंने विनाशकारी परीक्षण की तुलना में गैर–विनाशकारी मूल्यांकन

तकनीकों के लाभों पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपनी शैक्षणिक यात्रा के दौरान अपने तकनीकी कौशल को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। श्री अमित कुमार, वैज्ञानिक 'एफ' एवं पाठ्यक्रम समन्वयक ने मुख्य अतिथि, संकाय सदस्यों और प्रतिभागियों का परिचय दिया

अपने स्वागत संबोधन में, डीटीटीसी के वैज्ञानिक 'जी' एवं परियोजना निदेशक डॉ आशीष दुबे ने एमएसएमई और स्टार्टअप्स को सहयोग देने में डीटीटीसी की भूमिका पर प्रकाश डाला तथा प्रतिभागियों को केंद्र की तकनीकी सुविधाओं एवं अधिदेश के बारे में जानकारी दी। कार्यशाला में सैद्धांतिक जानकारी को व्यावहारिक प्रदर्शनों के साथ जोड़ा गया, जिससे प्रतिभागियों को अल्ट्रासोनिक मोटाई गेज और चुंबकीय कण परीक्षण उपकरणों जैसे एनडीई उपकरणों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने में मदद मिली। समापन सत्र के दौरान, डीटीटीसी के परियोजना निदेशक ने प्रतिभागियों के साथ बातचीत की, प्रतिक्रिया एकत्र की और उद्योग–तैयार कौशल विकसित करने के लिए मजबूत वैचारिक नींव बनाने के महत्व पर जोर दिया। कार्यक्रम का समापन भागीदारी प्रमाण पत्रों के वितरण और सभी उपस्थित लोगों की एक फोटोग्राफी सेशन के साथ हुआ।

डीएलजे में कार्मिक एवं भण्डार मामलों पर कार्यशाला

कार्मिक निदेशालय (डीओपी) तथा डीआरडीओ मुख्यालय द्वारा डीएल, जोधपुर में 18–19 सितंबर, 2025 को कार्मिक एवं भण्डार मामलों पर भण्डार कैडर अधिकारियों (समूह 'ए') के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री वी एस शेनॉय, ओएस एवं निदेशक, डीएलजे ने किया, जिन्होंने भण्डार मामलों को संभालने में अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही की आवश्यकता पर बल दिया। उद्घाटन सत्र में डॉ संजय के द्विवेदी, निदेशक, डीओपी, तथा डॉ मैया दीन, निदेशक, डीएफएमएम, डीआरडीओ मुख्यालय उपस्थित रहे। कार्यशाला में आचरण नियम, वरिष्ठता और डीपीसी, मूल्य बेंचमार्किंग एवं बातचीत, जीएफआर सिद्धांत, सार्वजनिक खरीद नीतियां, स्टोर से संबंधित केस स्टडी और लेखांकन चुनौतियां आदि से संबंधित मुद्दों पर विभिन्न सत्र आयोजित किए गए। कार्यशाला के तकनीकी सत्रों का आयोजन श्री वरुण नय्यर, आईडीएएस; अरुण जेटली, राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंधन संस्थान (एनआईएफएम); श्री जगदीप वैज्ञानिक 'जी' डीएफएमएमए, डीआरडीओ मुख्यालय; श्री अनिल अरोड़ा, अपर निदेशक, सेप्टम; तथा श्री प्रवीण कुमार दास, उप निदेशक, डीओपी द्वारा किया गया। कार्यशाला में लगभग 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

ईसा में रक्षा अनुप्रयोगों के लिए GEOINT पर पाठ्यक्रम

दिल्ली स्थित पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा) ने 22–26 सितंबर 2025 के दौरान ''रक्षा अनुप्रयोगों के लिए GEOINT ''विषय पर एक पाठ्यक्रम का आयोजन किया। इसका उद्देश्य बहु–संवेदी सुदूर संवेदन डेटा और उसके जीआईएस–रेडी भू–स्थानिक उत्पादों में रूपांतरण के बारे में जानकारी प्रदान करना था,

जिससे रक्षा योजना और संचालन में सुधार होगा। इस पाठ्यक्रम में कुल 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। एनसीएमआरडब्ल्यूएफ, इसरो, जेएनयू, एसएजी, सेवा और उद्योग जगत के वक्ताओं ने पाठ्यक्रम के दौरान व्याख्यान दिए। डॉ सुजाता दाश, वैज्ञानिक 'जी', पाठ्यक्रम निदेशक थीं तथा श्रीमती सुचित्रा चौधरी, वैज्ञानिक 'ई', उप पाठ्यक्रम निदेशक थीं।

डीईबीईएल में अग्नि सुरक्षा प्रशिक्षण और मॉक ड्रिल

रक्षा जैव अभियांत्रिकी एवं विद्युत चिकित्सा प्रयोगशाला (डीईबीईएल), बेंगलुरु ने 9 सितंबर 2025 को एक दिवसीय ''अग्नि सुरक्षा प्रशिक्षण और मॉक ड्रिल'' का आयोजन किया। प्रशिक्षण दो सत्रों में मेसर्स द सेफ टॉक, बेंगलुरु के एक विशेषज्ञ दल द्वारा आयोजित किया गया। सुबह का सत्र मुख्य रूप से आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (ईआरटी) के सदस्यों पर केंद्रित था, जो ऐसी किसी भी घटना के दौरान साथी सदस्यों के बचाव और निकासी में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं। सत्र के दौरान, अग्नि सुरक्षा प्रोटोकॉल, न्यूनतम प्रतिक्रिया समय प्राप्त करने के लिए अपनाए जाने वाले तरीके, सुरक्षित संयोजन बिंदु, निगरानी, निकासी के बाद की गतिविधियाँ, आग बुझाने के प्रभावी तरीके आदि पर चर्चा की गई। दूसरे सत्र में एक मॉक ड्रिल आयोजित की गई और यह सभी डीईबीईएल कर्मचारियों के लिए खुला था। यह कार्यक्रम आग से होने वाली चोट या जनहानि के जोखिम को कम करने वाली सुरक्षा प्रथाओं और सुरक्षित निकासी प्रक्रियाओं को बढ़ावा देने में उपयोगी रहा।

राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा कार्यक्रम

डीईबीईएल, बेंगलुरु

मिशन कर्मयोगी के एक भाग के रूप में, डीआरडीओ नागरिक–केंद्रित, प्रदर्शन–उन्मुख और भविष्य के लिए तैयार कार्यबल के निर्माण हेतु सक्रिय रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहा है। इसे क्षमता निर्माण आयोग (सीबीसी) के मार्गदर्शन में डिजाइन किया गया है और iGOT के माध्यम से संचालित किया गया। कर्मयोगी प्लेटफॉर्म पर, ये कार्यक्रम कर्मचारियों के बीच दक्षता, जवाबदेही, और पेशेवर विकास को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

रक्षा जैव अभियांत्रिकी एवं विद्युत चिकित्सा प्रयोगशाला (डीईबीईएल) से डॉ ए अपर्णा जी शास्त्री, वैज्ञानिक 'एफ' तथा सुश्री ऋचा शाह, वैज्ञानिक 'ई' को राष्ट्रीय कर्मयोगी कार्यक्रम के तहत मास्टर ट्रेनर के रूप में प्रशिक्षित किया गया। ये प्रशिक्षक, जो मानव संसाधन विकास विभाग, डीईबीईएल का हिस्सा हैं, ने सभी डीईबीईएल अधिकारियों

और कर्मचारियों के लिए कर्मयोगी एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करवाया। यह कार्यक्रम चार बैचों में आयोजित किया गया जिसमें 133 अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण सत्रों में संवादात्मक चर्चाएं, समूह गतिविधियां और केस–आधारित शिक्षण शामिल थे, जिससे प्रतिभागियों को अपने भीतर सेवा भाव की भावना को पोषित करते हुए राष्ट्रीय कर्मयोगी और राष्ट्र–निर्माता, के रूप में विकसित होने में उनकी भूमिका पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कर्मचारियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा कार्यक्रम की प्रासंगिकता को उजागर किया।

डीएमएसआरडीई, कानपुर

रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान और विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर ने स्थापना के सभी कर्मचारियों के लिए 15–26 सितंबर 2025 के दौरान राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व मास्टर प्रशिक्षकों मोहम्मद इमामुद्दीन, वैज्ञानिक 'एफ', श्री रुद्रेश कुमार, वैज्ञानिक 'ई' तथा श्री वी एस पांडे, वैज्ञानिक 'ई' ने किया। दो सप्ताह तक चले इस कार्यक्रम के दौरान कुल 303 कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। डॉ किंग्सुक मुखोपाध्याय, ओएस एवं निदेशक, डीएमएसआरडीई ने सफल प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन के लिए श्री अमित सरैया, वैज्ञानिक 'एफ' तथा डॉ मोहित कटियार, वैज्ञानिक 'ई' एवं मानव संसाधन विकास टीम के प्रयासों की सराहना की।

एनएसटीएल, विशाखापत्तनम

एनएसटीएल, विशाखापत्तनम के सभी कर्मचारियों के लिए सितंबर माह में राष्ट्रीय कर्मयोगी मिशन पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का संचालन मास्टर ट्रेनर श्री वाई वीराचारी, वैज्ञानिक 'एफ', श्री टी बालाकृष्ण, वैज्ञानिक 'ई', श्री एस ईश्वर राव, वैज्ञानिक 'ई', श्री पी सुरीबाबू, वैज्ञानिक 'ई', श्री रघुराम काकीनाडा, वैज्ञानिक 'ई' तथा श्री अमित कुमार, वैज्ञानिक 'ई' द्वारा किया गया। वक्ताओं ने राष्ट्र निर्माण में प्रत्येक अधिकारी के योगदान को रेखांकित किया और कहा कि प्रभावी सार्वजनिक सेवा, सामाजिक प्रगति, समावेशी विकास भारत के दीर्घकालिक विकास लक्ष्यों में सीधे योगदान देती है। प्रशिक्षण ने प्रतिभागियों को एक सक्षम और उत्तरदायी सरकार के व्यापक दृष्टिकोण के साथ अपनी व्यक्तिगत भूमिकाओं को संरेखित करने के लिए प्रोत्साहित किया। एनएसटीएल के निदेशक डॉ अब्राहम वर्गीस ने प्रशिक्षण के सूत्रधार के रूप में मास्टर ट्रेनरों द्वारा किए गए प्रयासों और योजनाबद्ध तरीके से सभी कर्मचारियों के लिए एक सफल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए मानव संसाधन विकास टीम की सराहना की।

डीआईएचएआर में क्लस्टर परिषद की बैठक

उच्च उन्नतांश अनुसंधान रक्षा संस्थान (डीआईएचएआर), लेह ने 18–21 सितंबर 2025 के दौरान आयुध एवं युद्ध अभियांत्रिकी (एसीई) क्लस्टर की 128वीं क्लस्टर परिषद बैठक (सीसीएम) का आयोजन किया। यह बैठक प्रोफेसर (डॉ) प्रतीक किशोर, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (एसीई) की अध्यक्षता में हुई, जिसमें एसीई क्लस्टर प्रयोगशालाओं के सभी निदेशकों, केंद्र प्रमुखों, महाप्रबंधकों और वैज्ञानिकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। अध्यक्ष ने उच्च–ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए डीआईएचएआर द्वारा विकसित बकरी की 'सिंधु' नस्ल पर तकनीकी बुलेटिन तथा डीआईएचएआर की प्रयोगशाला सुरक्षा नियमावली जारी की। सीसीएम सदस्यों और एसीई क्लस्टर के वैज्ञानिकों ने खरनाक (14500 फीट) स्थित प्रस्तावित उच्च उन्नतांश परीक्षण सुविधा का अवलोकन किया।

डीआईएचएआर के केंद्र प्रमुख डॉ ओ पी चौरसिया और उनकी टीम ने सभी प्रतिभागियों के लिए सियाचिन सेक्टर तथा पूर्वी लद्दाख का दौरा आयोजित किया ताकि उन्हें उच्च–ऊंचाई वाले परिचालन क्षेत्रों से परिचित कराया जा सके और लद्दाख सेक्टर की विषम जलवायु एवं पहाड़ी इलाकों में सैनिकों के साथ बातचीत को सुगम बनाया जा सके। इस यात्रा के दौरान, केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के माननीय उपराज्यपाल श्री कविंदर गुप्ता; श्री ताशी ग्यालसन, मुख्य चुनाव आयुक्त, एलएएचडीसी, लेह; तथा जीओसी 14 कोर, लेफ्टिनेंट जनरल हितेश भल्ला, यूवाईएसएम, एससी**, एसएम, वीएसएम के साथ एक उच्च–स्तरीय बैठक भी हुई। पूरी सीसीएम टीम और गणमान्य व्यक्तियों ने डीआईएचएआर की उपलब्धियों और सशस्त्र बलों तथा लद्दाख की स्थानीय आबादी को प्रदान की जा रही सेवाओं की सराहना की।

डीएमएसआरडीई में प्रयोगशाला अनुसंधान परिषद की बैठक

रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर में 19 सितंबर, 2025 को प्रयोगशाला अनुसंधान परिषद (एलआरसी) की बैठक हुई। आईआईएससी बेंगलुरु के एमेरिटस प्रोफेसर एवं आईआईटी बॉम्बे के पूर्व निदेशक प्रो0 अशोक मिश्रा ने बैठक की अध्यक्षता की। स्वागत संबोधन डॉ किंगसुक मुखोपाध्याय, ओएस एवं निदेशक, डीएमएसआरडीई ने दिया। प्रो0 कांतेश बलानी, आईआईटी कानपुर; प्रो0 प्रकाश चंद्र मंडल, आईआईटी कानपुर; डॉ मनोज कुमार बुरागोहेन, वैज्ञानिक 'एच', एएसएल; श्री राकेश कुमार सिंह, वैज्ञानिक जी, आरसीआई; तथा सभी तकनीकी एवं तकनीकी–प्रबंधकीय प्रभाग प्रमुख बैठक में शामिल हुए। श्री आलोक कुमार दीक्षित, सह निदेशक ने डीएमएसआरडीई द्वारा संचालित की जा रही तकनीकी गतिविधियों से एलआरसी को अवगत कराने के लिए एक विस्तृत प्रस्तुति दी, जिसके बाद तकनीकी संभागीय प्रमुखों द्वारा व्यक्तिगत प्रस्तुतियां दी गईं। धन्यवाद प्रस्ताव श्री आलोक कुमार दीक्षित, वैज्ञानिक 'जी' एवं सदस्य सचिव, एलआरसी द्वारा दिया गया।

पीएक्सई में कॉर्पोरेट समीक्षा

प्रूफ एवं प्रयोगात्मक संगठन (पीएक्सई), चांदीपुर की समीक्षा महानिदेशकों की समिति और कॉर्पोरेट समीक्षा समिति द्वारा 12 अक्टूबर 2025 को डॉ बी के दास, डीएस एंड डीजी (ईसीएस) की अध्यक्षता में की गई। श्री यू राजा बाबू, डीएस एंड डीजी (एमएसएस); श्री लाल चंद मंगल, डीएस एंड डीजी (टीएम); प्रो0 प्रतीक किशोर, डीएस एंड डीजी (एसीई); डॉ मयंक द्विवेदी, ओएस एंड डीजी (एचआर); डॉ मनु कोरुल्ला, ओएस एंड डीजी (आर एंड एम); निदेशक डीएमएस; निदेशक डीएफएमएम; निदेशक डीएचआरडी; निदेशक डीओपी; तथा निदेशक डीपी एंड सी बैठक में शामिल हुए। महानिदेशकों की समिति के अध्यक्ष ने प्रयोगशाला द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की और पीएक्सई को तकनीकी उन्नति के अगले स्तर तक पहुंचने में सक्षम बनाने के साथ–साथ परीक्षण और मूल्यांकन सहायता प्रदान करने के लिए महानिदेशक (एसीई) तथा निदेशक पीएक्सई को बधाई दी। निदेशक, पीएक्सई ने यह भी कहा कि अनुसंधान एवं विकास, उत्पादन और निर्यात के प्रति जिम्मेदारियों वाला एक अनूठा परीक्षण एवं मूल्यांकन प्रतिष्ठान होने के नाते, पीएक्सई को समय पर परीक्षण और मूल्यांकन करने तथा बहु–विषयक संस्थानों, उद्योगों और प्रतिष्ठानों की जरूरतों को पूरा करने वाली रिपोर्ट तैयार करने के लिए रेंज इंस्ट्रूमेंटेशन, फायरिंग ऑपरेशन, नवाचार और लॉजिस्टिक्स व्यवस्था पर नेतृत्व का प्रदर्शन करना होगा। निदेशक, पीएक्सई ने महानिदेशकों की समिति और कॉर्पोरेट समीक्षा की संयुक्त समीक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। निदेशक, पीएक्सई ने महानिदेशकों की समिति और कॉर्पोरेट समीक्षा के एजेंडे और दिशानिर्देशों के अनुसार एक प्रस्तुति दी। समीक्षा के दौरान प्रयोगशाला संबंधी मुद्दों, यूनियनों, संघों, कार्य समितियों, डीआरटीसी, प्रशासन एवं संबद्ध संस्थाओं और डीआरडीएस से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई।

आईएनएमएएस में सीआईएसएफ के लिए CBRN आपातकालीन प्रबंधन पर पाठ्यक्रम

15–19 सितंबर 2025 के दौरान परमाणु चिकित्सा एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (आईएनएमएएस), दिल्ली में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) कर्मियों के लिए CBRN आपातकालीन प्रबंधन पर पाँच दिवसीय विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम में कुल 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण को व्याख्यान, प्रदर्शन, और समीक्षा अभ्यासों को एकीकृत करने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि प्रत्येक प्रतिभागी अपनी परिचालन

समझ और कार्यात्मक क्षमताओं को मजबूत कर सके। कार्यक्रम की शुरुआत उद्घाटन सत्र के साथ हुई, जिसके बाद डॉ हिमांशु ओझा, वैज्ञानिक 'एफ' एवं CBRN रक्षा प्रमुख द्वारा CBRN खतरे का अवलोकन प्रस्तुत किया गया। प्रतिभागियों को CBRN एजेंटों और उनसे जुड़े स्वास्थ्य संबंधी खतरों की बुनियादी अवधारणाओं के प्रति संवेदनशील बनाया गया।

संकाय ने संवादात्मक केस स्टडीज, CBRN घटना परिदृश्यों और टेबलटॉप अभ्यासों के माध्यम से गहन शिक्षण को सुगम बनाया। संपूर्ण शरीर गणक, रेडियोलॉजिकल एजेंट डिटेक्टर, सुरक्षात्मक उपकरण, सीबीआरएन रिमोट से संचालित वाहन दक्ष, मानवरहित हवाई वाहन नेत्र, पुनर्वर्तन (उन्नत घाव भरने वाला उपकरण), और अल्ट्रा स्वच्छ श्रृंखला उपकरण जैसे महत्वपूर्ण उपकरणों के उपयोग पर व्यावहारिक प्रदर्शन आयोजित किए गए।

समापन समारोह में वैज्ञानिक 'जी' एवं सह निदेशक डॉ देव व्रत कम्बोज ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने CBRN आपात स्थितियों के प्रबंधन में सशस्त्र एवं अर्धसैनिक बलों की तैयारी और प्रतिक्रिया क्षमताओं को बढ़ाने में ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों के महत्व पर प्रकाश डाला।

आईटीएम में प्रौद्योगिकी पूर्वानुमान पर कार्यशाला

मसूरी स्थित प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम) ने 17–19 सितंबर 2025 के दौरान बेंगलुरु स्थित वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (एडीई) में एयरो क्लस्टर के लिए तीन दिवसीय 'प्रौद्योगिकी पूर्वानुमान पर कार्यशाला' का आयोजन किया। कार्यशाला में कुल 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आईआईटी मद्रास, आईआईटी बॉम्बे, डीआरडीओ के प्रौद्योगिकी प्रबंधन कॉर्पोरेट निदेशालय और आईटीएम संकाय के विशेषज्ञों ने बहुमूल्य विचार साझा किए। कार्यशाला का उद्देश्य वैज्ञानिकों को भविष्य की प्रौद्योगिकी विशेषताओं का व्यवस्थित रूप से पूर्वानुमान लगाने और तकनीकी परिवेश का प्रभावी ढंग से अध्ययन करके संगठनात्मक निर्णय लेने की प्रक्रिया में सुधार करने की पद्धति से लैस करना था।

कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री वाई दिलीप, डीएस एवं निदेशक, एडीई ने किया। एक प्रभावशाली पैनल चर्चा के दौरान प्रमुख प्रौद्योगिकी पूर्वानुमान संबंधी अंतर्दृष्टि पर विचार–विमर्श किया गया। इसकी अध्यक्षता और संचालन पद्मश्री डॉ प्रहलाद रामा राव, पूर्व सीसी आरएंडडी एवं वीसी डीआईएटी पुणे ने किया और इसमें श्री जितेंद्र जे जाधव, महानिदेशक एडीए; श्रीमती पी0 संत्या, ओएस एवं निदेशक सीएबीएस; श्री एपीवीएस प्रसाद, ओएस एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी सीईएमआईएलएसी; तथा डॉ एस वी रमण मूर्ति, ओएस एवं निदेशक, जीटीआरई ने भागीदारी दिखायी।

आईटीएम में परियोजना प्रबंधन तथा डीपीएफएम पर लघु पाठ्यक्रम

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम) द्वारा 12–14 अगस्त 2025 के दौरान वाहन अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (वीआरडीई), अहिल्यानगर में 'परियोजना प्रबंधन तथा डीपीएफएम पर लघु पाठ्यक्रम' शीर्षक से पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री कपिल पुरसवानी, वैज्ञानिक 'ई', वीआरडीई से पाठ्यक्रम निदेशक थे, तथा श्री अक्षय लखनपाल, वैज्ञानिक 'डी' आईटीएम से पाठ्यक्रम निदेशक थे। पाठ्यक्रम का उद्घाटन श्री जी राममोहन राव, ओएस एवं निदेशक वीआरडीई, तथा श्री एस पी डोभाल, निदेशक ने किया। वीआरडीई के निदेशक ने वैज्ञानिकों के प्रशिक्षण के लिए इस तरह के पाठ्यक्रमों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को डीपीएफएम और परियोजना प्रबंधन के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए इस अवसर का पूरा उपयोग करने का निर्देश दिया।

प्रतिभागियों को परियोजना दस्तावेज तैयार करने में व्यावहारिक अंतर्दृष्टि दी गई। जोखिम प्रबंधन पर भी चर्चा हुई, जिसमें टेक्नोलॉजी रेडिनेस लेवल्स और प्रोजेक्ट रेडिनेस इंडेक्स शामिल थे। श्री के. सेंथिल कुमार, वैज्ञानिक 'एच' एवं वीआरडीई के कार्यवाहक निदेशक, समापन सत्र के मुख्य अतिथि थे। श्रीमती अनीता मोहिंद्रा, वैज्ञानिक 'जी' एवं डीन अकादमिक, आईटीएम ने समापन सत्र के दौरान पाठ्यक्रम प्रतिभागियों के साथ बातचीत की।

कार्मिक समाचार

नियुक्ति

डॉ निशि मिश्रा, वैज्ञानिक 'जी' ने 1 अक्टूबर 2025 से रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर), दिल्ली के निदेशक का पदभार ग्रहण किया। डॉ मिश्रा ने अपने तीन दशकों से अधिक के विशिष्ट कार्यकाल के दौरान व्यक्तित्व मूल्यांकन और सैन्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने 1994 में चयन केंद्र ईस्ट, इलाहाबाद में कार्यभार संभाला और भारतीय सेना में कमीशन प्राप्त अधिकारियों के रूप में चयन हेतु संभावित उम्मीदवारों के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन हेतु एक निर्धारक के रूप में अपनी पेशेवर यात्रा शुरू की।

उन्होंने आत्महत्याओं और भ्रातृहत्याओं, सशस्त्र बलों में नौकरी के तनाव और अभिघात के बाद के तनाव, परामर्श, मानसिक स्वास्थ्य एवं संगठनात्मक व्यवहार से संबंधित शोध अध्ययनों में व्यापक योगदान दिया है। शोध प्रयासों के मार्गदर्शन, मूल्यांकनकर्ताओं के निरंतर प्रशिक्षण, और चयन प्रणाली के मानकीकरण में उनके नेतृत्व ने अधिकारी चयन प्रणाली को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुख्यालय स्थित जनसंपर्क निदेशालय (डीपीआई) में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने डीआरडीओ की ब्रांड–निर्माण पहलों का निरीक्षण किया और मसूरी स्थित प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आईटीएम) में प्रशिक्षण प्रमुख एवं संगठनात्मक व्यवहार संकाय के रूप में कार्य करते हुए, उन्होंने विविध तकनीकी–प्रबंधकीय योगदान दिया तथा पाठ्यक्रम निदेशक के रूप में कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। वे विभिन्न अनुसंधान एवं विकास तथा शैक्षणिक समितियों की विशेषज्ञ सदस्य रही हैं और विभिन्न तकनीकी कार्यक्रमों एवं सम्मेलनों में अतिथि व्याख्यान दे चुकी हैं।

उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है और केंद्रीय मनोचिकित्सा संस्थान, रांची से एम फिल. तथा रांची विश्वविद्यालय से ही पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। वे दिल्ली विश्वविद्यालय, मानव व्यवहार एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (IHBAS) और एमिटी विश्वविद्यालय में अतिथि संकाय सदस्य रही हैं। उन्होंने प्रतिष्ठित पत्रिकाओं और राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में लेख प्रकाशित किए हैं तथा तकनीकी मैनुअल एवं शोध रिपोर्ट भी लिखी हैं।

उनके निरंतर अनुसंधान एवं विकास योगदान के सम्मान में, उन्हें डीआरडीओ लोकप्रिय विज्ञान संचार पुरस्कार, प्रौद्योगिकी समूह पुरस्कार, लैब साइंटिस्ट ऑफ द ईयर पुरस्कार, एन एन सेन पुरस्कार और कई अन्य पेशेवर संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है। वह भारतीय पुनर्वास परिषद, भारतीय नैदानिक मनोविज्ञान संघ, भारतीय स्वास्थ्य मनोविज्ञान संघ, भारतीय अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान संघ और कई अन्य पेशेवर संस्थाओं की सदस्य हैं।

उच्च योग्यता अर्जन

एनपीओएल, कोच्चि

श्री जोजिश जोसेफ वी, वैज्ञानिक 'एफ', नौसेना भौतिक और समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि को कोचीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्चि से ''टोड ऐरे सोनार के लिए गतिशील विश्वसनीयता विश्लेषण विधियां'' शीर्षक थीसिस के लिए पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है।

हिंदी पखवाड़ा

डेसीडॉक, दिल्ली

रक्षा वैज्ञानिक सूचना एवं प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली ने 15–30 सितंबर 2025 के दौरान उत्साहपूर्वक हिंदी पखवाड़ा मनाया। पखवाड़े का उद्घाटन डेसीडॉक की निदेशक श्रीमती किरन चौहान ने किया। अपने उद्घाटन संबोधन में, उन्होंने अधिकारियों द्वारा अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिकतम प्रयोग करने पर जोर दिया। पखवाड़े के दौरान, निबंध लेखन, कविता पाठ, अनुवाद, हिंदी टंकण सहित विभिन्न प्रतियोगिताएँ और हिंदी में कई अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए। समापन समारोह 30 सितंबर 2025 को आयोजित किया गया जिसमें विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए गए। निदेशक, डेसीडॉक ने पुरस्कार वितरित किए।

डीआईबीटी, मैसूर

14–30 सितंबर 2025 के दौरान जैव–रक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईबीटी), मैसूर में हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया था। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा के विकास और संरक्षण के प्रति कर्मचारियों में उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ाना और उन्हें अपनी भाषा पर गर्व करने के लिए प्रेरित करना था। हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, चित्र–आधारित कहानी लेखन, तकनीकी शब्द–अर्थ प्रतियोगिता, हिंदी भाषण प्रतियोगिता और हिंदी कविता एवं गीत–गायन प्रतियोगिता शामिल थीं। अधिक से अधिक लोगों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु प्रतियोगिताओं को हिंदी और अहिंदी भाषी दो श्रेणियों में विभाजित किया गया।

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 30 सितंबर, 2025 को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस गौरवपूर्ण अवसर पर, डॉ आर कुमार, वैज्ञानिक 'जी' एवं केंद्र प्रमुख, तथा डॉ ओम प्रकाश चौहान, वैज्ञानिक 'जी' एवं हिंदी संपर्क अधिकारी ने मंच पर अपनी गरिमामयी उपस्थिति से समारोह की शोभा बढ़ाई। केंद्र प्रमुख ने सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार और अन्य प्रतिभागियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए तथा सभी प्रतिभागियों के उत्साह और प्रयासों की हार्दिक सराहना की। इस समारोह का मुख्य उद्देश्य यह था कि हम सभी हिंदी के प्रति अपने प्रेम को जागृत करें, इसके महत्व को अपने हृदय में आत्मसात करें और इसके प्रचार–प्रसार में अपना सर्वोत्तम योगदान दें।

डीएमआरएल, हैदराबाद

रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद ने 14 अगस्त 2025 को वित्तीय वर्ष 2025–26 की अपनी दूसरी हिंदी कार्यशाला आयोजित की, जिसमें कार्यस्थल पर राजभाषा को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई। डीएमआरएल के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री पवन कुमार ने अतिथि वक्ता, गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक, श्री संतोष कुमार का स्वागत किया। श्री पवन ने डीएमआरएल में त्रैमासिक हिंदी कार्यशालाओं के महत्व और विभागों में राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन को सुगम बनाने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला।

श्री संतोष कुमार ने दैनिक प्रशासनिक कार्यों में हिंदी को शामिल करने पर जोर दिया और हिंदी सीखने और उसका कुशलतापूर्वक उपयोग करने के व्यावहारिक सुझाव दिए। उन्होंने कार्यालय दस्तावेजीकरण, सार्वजनिक पट्टों और नामपट्टों के लिए तीन भाषाओं – हिंदी, अंग्रेजी, और क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग पर भी जोर दिया तथा द्विभाषी कार्यालय उपकरणों की सिफारिश की। राजभाषा नियम, 1976 के प्रमुख नियमों की व्याख्या की गई, जिसमें कार्यालय प्रमुखों, अनुभागों और कर्मचारियों के अनुपालन के दायित्व भी शामिल थे। द्विभाषी दस्तावेजों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की नियमित बैठकों के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया।

वास्तविक जीवन के उदाहरणों पर आधारित इस संवादात्मक सत्र ने प्रतिभागियों को आकर्षित किया और उनका आत्मविश्वास बढ़ाया। विभिन्न संवर्गों के कुल 44 डीएमआरएल कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और भविष्य की पहलों में रुचि व्यक्त की।

कार्यशाला का सफल संचालन श्री पवन कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने किया और डीएमआरएल के कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्री आशीष कुमार मिश्रा ने सहयोग दिया।

डीएमएसआरडीई, कानपुर

15–26 सितंबर 2025 के दौरान रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान और विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर में राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा हिन्दी पखवाड़ा–2025 का आयोजन किया गया। डॉ किंगशुक मुखोपाध्याय, ओएस एवं निदेशक, डीएमएसआरडीई, ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह का उद्घाटन किया। इस अवसर पर हिंदी में निबंध लेखन, कहानी लेखन, हिंदी भाषा ज्ञान, टाइपिंग, वाद–विवाद, वैज्ञानिक प्रस्तुति और सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं का उद्देश्य प्रयोगशाला में राजभाषा के व्यापक प्रयोग को बढ़ावा देना था। समापन दिवस पर कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें डीएमएसआरडीई के 35 कवियों ने भाग लिया और अपनी कविताएँ सुनाईं। इसके बाद डीएमएसआरडीई के सह निदेशक डॉ डी एस बाग द्वारा सभी कवियों को स्मृति चिन्ह वितरित किए गए।

डीआरडीओ मुख्यालय, दिल्ली

डीआरडीओ मुख्यालय, दिल्ली में हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह 24 सितंबर 2025 को आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ समीर वी कामत, सचिव, अनुसंधान एवं विकास विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ; डॉ मनु कोरुला, महानिदेशक (अनुसंधान एवं प्रबंधन); तथा श्री सुनील शर्मा, निदेशक, संसदीय कार्य निदेशालय, राजभाषा तथा संचालन एवं प्रबंधन द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा 'कीर्ति पुरस्कार–25' के अंतर्गत मुख्यालय की गृह पत्रिका 'रक्षा अनुसंधान भारती' को द्वितीय पुरस्कार मिलने पर मुख्यालय की राजभाषा टीम के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने डीआरडीओ मुख्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपील की कि वे राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक सरकारी कार्य करके अपने संवैधानिक दायित्व को पूरा करें। महानिदेशक

(आर एंड एम) ने भी उपस्थित कार्मिकों को राजभाषा द्वारा दिए गए लक्ष्यों के अनुसार हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। संसदीय कार्य, राजभाषा तथा O&M के निदेशक ने राजभाषा समूह की समग्र उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। निदेशक ने मुख्यालय के साथ–साथ प्रयोगशालाओं/संपदाओं/केंद्रों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे सार्थक प्रयासों की भी सराहना की।

इस अवसर पर, डीआरडीओ मुख्यालय की गृह पत्रिका 'रक्षा अनुसंधान भारती' के 21वें अंक का विमोचन भी डॉ कामत द्वारा किया गया।

जीटीआरई, बेंगलुरु

28 अगस्त 2025 से 10 सितंबर 2025 तक गैस टरबाइन अनुसंधान प्रतिष्ठान (जीटीआरई), बेंगलुरु में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिंदी हस्तलेखन, चित्र देखकर हिंदी में कहानी लिखो, निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण, प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली अनुवाद, प्रश्नोत्तरी, भाषण प्रतियोगिता और अंताक्षरी जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के एनआईपीसीसीडी की उप निदेशक (सेवानिवृत्त) डॉ मंजू ढौंडियाल तथा जीटीआरई के ओएस एवं निदेशक डॉ एस वी रमण मूर्ति उपस्थित थे। सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती सुप्रिया अनिल ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। श्री प्रकाश कुमार यदु, वैज्ञानिक 'एफ' एवं ओएलआईसी के उपाध्यक्ष ने राजभाषा पर वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके बाद, श्री सुजीत कुमार सिंह, वैज्ञानिक 'जी' एवं तकनीकी निदेशक (हिंदी अनुभाग) ने हिंदी दिवस के अवसर पर गृह मंत्री तथा डीआरडीओ के अध्यक्ष से प्राप्त संदेशों को पढ़ा। इसके बाद डॉ एस वी रमण मूर्ति, ओएस एवं निदेशक, जीटीआरई ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी संस्कृति से गहराई से जुड़ी हुई है और यह हमारी पहचान और ताकत है। उन्होंने सलाह दी कि 'हिंदी दिवस' और 'हिंदी पखवाड़ा' जैसे कार्यक्रम आयोजित होते रहने चाहिए। उन्होंने 'हिंदी पखवाड़े' के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई देकर अपने संबोधन का समापन किया।

अपने मुख्य संबोधन में, डॉ मंजू ढौंडियाल ने राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रभावी ढंग से प्रकाश डाला और मुख्य बिंदुओं को स्पष्टता के साथ व्यक्त किया। उनका संबोधन सुव्यवस्थित, स्पष्ट, और आकर्षक था। उनका लहजा प्रेरक था, जिसने अधिकारियों को राजभाषा के प्रचार–प्रसार में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। कुल मिलाकर, संबोधन प्रभावशाली, संक्षिप्त और प्रेरक था।

इसके बाद मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों एवं अधिकारियों ने हिंदी गृह पत्रिका 'हंस' के 22वें अंक का विमोचन किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सह निदेशक श्री अजय प्रताप ने की और हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। धन्यवाद ज्ञापन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के श्री बरुण कुमार पाण्डेय ने किया।

ईसा, दिल्ली

पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली ने 2 सितंबर 2025 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला

का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ सुमंत मुखर्जी, वैज्ञानिक 'जी' ने किया। वक्ता, श्री अनुराग पाठक, वैज्ञानिक 'एफ' ने 'राजभाषा नीति एवं नियम' विषय पर व्याख्यान दिया ।

कार्यशाला में हिंदी भाषा के ऐतिहासिक योगदान सहित राजभाषा के महत्व, राजभाषा अधिनियम 1963,नियम 1976 आदि पर भी प्रकाश डाला गया।

एमटीआरडीसी, बेंगलुरु

सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी), बेंगलुरु ने सितंबर की शुरुआत में हिंदी पखवाड़ा मनाया। केंद्र में हिंदी में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए, जैसे नोटिंग और ड्राफ्टिंग, प्रश्नोत्तरी, गायन, पीक एंड स्पीक, निबंध लेखन और क्रॉसवर्ड पहेलियाँ आदि।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री राजीव मराठे, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक, केंद्र प्रमुख, सीएएसडीआईसी उपस्थित थे। उन्होंने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए राजभाषा के रूप में हिंदी के महत्व पर बल दिया। इस अवसर पर माननीय मुख्य अतिथि द्वारा गृह पत्रिका उमंग (2025–26), तकनीकी अनुभाग, के 20वें अंक का विमोचन किया गया।

एनपीओएल, कोच्चि

नौसेना भौतिक एवं समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि ने 8–25 सितंबर 2025 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया। डॉ दुवुरी शेषागिरि, ओएस एवं निदेशक, एनपीओएल ने समारोह का उद्घाटन संबोधन दिया। श्री के मोहनन, वैज्ञानिक 'जी' एवं निदेशक (प्रबंधन) तथा डॉ बैजू एम नायर, वैज्ञानिक 'एफ' एवं जीडी (पी एंड ए) ने बधाई दी। एनपीओएल कर्मचारियों के लिए हिंदी में पंद्रह प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। एनपीओएल के अंडरवाटर एकॉस्टिक

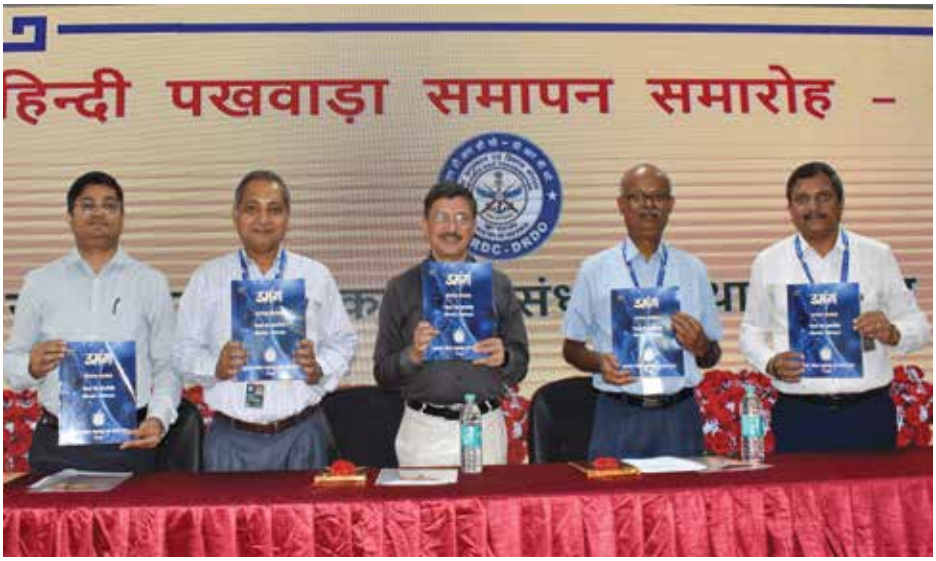

रिसर्च फैसिलिटी (यूएआरएफ) के कर्मचारियों के लिए यूएआरएफ परिसर, इडुक्की में हिंदी लिखावट प्रतियोगिता आयोजित की गई। सभी कर्मचारियों को चार सदनों अर्थात एन, पी, ओ, तथा एल में बांटा गया था। प्रतियोगिताओं का उद्देश्य प्रयोगशाला में राजभाषा के व्यापक उपयोग को बढ़ावा देना था। डीआरडीओ द्वारा प्रायोजित भवन के वरुण विद्यालय के छात्रों के लिए भी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

निदेशक (प्रबंधन) द्वारा समापन समारोह के दौरान छात्रों सहित सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण पत्र और पुरस्कार राशि प्रदान की गई। समारोह के दौरान एनपीओएल की हिंदी पत्रिका 'लहर' के नवीनतम अंक का विमोचन भी किया गया। श्री राम लोचन अवस्थी, वैज्ञानिक 'ई' एवं हिंदी अधिकारी ने इस वर्ष आयोजित पखवाड़ा समारोहों का अवलोकन प्रस्तुत किया। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले 'ओ' सदन को 'हिंदी पखवाड़ा रोलिंग ट्रॉफी' प्रदान की गई। इसके बाद, एनपीओएल के कर्मचारियों के उन बच्चों को प्रमाण पत्र और पुरस्कार वितरित किए गए,

जिन्होंने इस वर्ष आयोजित सीबीएसई परीक्षाओं में हिंदी भाषा में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए हैं। श्री किरण गोविंद वी, वैज्ञानिक 'एफ' ने कार्यक्रम का समन्वयन किया।

पीएक्सई, चांदीपुर

प्रूफ एवं प्रयोगात्मक संगठन (पीएक्सई), चांदीपुर ने 3–25 सितंबर 2025 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन वैज्ञानिक 'जी' एवं कार्यवाहक निदेशक डॉ पी के दासगुप्ता ने सभी को राजभाषा शपथ दिलाकर किया। कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

प्रथम, द्वितीय, और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को राजभाषा शील्ड प्रदान की गईं। 25 सितंबर 2025 को श्री सुबोध कुमार नायक, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, पीएक्सई की अध्यक्षता में हिंदी दिवस मनाया गया।

माननीय रक्षा मंत्री और गृह मंत्री के हिंदी दिवस संदेश पढ़े गए। विजेताओं को श्री नायक, वैज्ञानिक 'जी' तथा सह निदेशक डॉ एच एस पांडा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

डीएमआरएल द्वारा डीआरडीओ केंद्रीय क्षेत्र कैरम प्रतियोगिता 2025-26 की मेजबानी

रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद ने 11–14 अगस्त 2025 के दौरान डीआरडीओ केंद्रीय क्षेत्र कैरम प्रतियोगिता 2025–26 की मेजबानी की। इस प्रतियोगिता में विभिन्न डीआरडीओ प्रयोगशालाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली दस टीमों (24 महिला और 96 पुरुष खिलाड़ियों से युक्त) ने उत्साही भागीदारी की, जिनमें डीएमआरएल, डीआरडीएल, आरसीआई, एएसएल, डीएलआरएल, एनएसटीएल, आईटीआर, पीएक्सई, आरसीएमए, और एसएफसी शामिल हैं। प्रतियोगिता का उद्घाटन डीएमआरएल के ओएस एवं निदेशक डॉ आर बालामुरलीकृष्णन ने किया। विशिष्ट अतिथियों में डॉ ओम प्रकाश परिदा, वैज्ञानिक 'एफ' एवं अध्यक्ष, केंद्रीय जोन खेल परिषद; श्री सी एम ओम प्रकाश, वैज्ञानिक 'एफ' एवं सह–अध्यक्ष, डीएमआरएल कार्य समिति; डॉ डी एम राज कुमार, वैज्ञानिक 'एफ' एवं खेल अध्यक्ष, डीएमआरएल कार्य समिति; डीएमआरएल कार्य समिति के अन्य महत्वपूर्ण पदाधिकारी; स्थानीय प्रयोगशालाओं से जेसीएम III सदस्य; तथा डीएमआरएल से यूनियन प्रतिनिधि शामिल थे। टीम आरसीआई (पुरुष) तथा टीम पीएक्सई (महिला) को चैंपियन का खिताब मिला, जबकि टीम आईटीआर (पुरुष) तथा टीम आरसीआई (महिला) ने उपविजेता स्थान हासिल किया।

रक्तदान दिवस 2025

डीआरडीओ मुख्यालय, दिल्ली

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद (एबीटीवाईपी) के सहयोग से डीआरडीओ मुख्यालय के प्रबंधन सेवा निदेशालय (डीएमएस) द्वारा राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस 2025 बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। 17 सितंबर 2025 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। यह अभियान ''रक्तदान से आशाः साथ मिलकर हम जीवन बचाएँ'' के प्रेरक नारे के तहत आयोजित किया गया। शिविर के दौरान कुल 91 रक्तदाताओं ने सफलतापूर्वक रक्तदान किया, जो 2024 में 48 रक्तदाताओं की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है। यह उल्लेखनीय वृद्धि जीवन बचाने के प्रति बढ़ती सामाजिक जिम्मेदारी और सामूहिक प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

इस अभियान ने स्वैच्छिक रक्तदान के महत्व पर जोर दिया, क्योंकि यह एक मानवीय कार्य है जो जरूरतमंदों

को समय पर रक्त उपलब्ध कराता है। जागरूकता संदेश, प्रेरक संवाद, और चिकित्सा मार्गदर्शन भी इस कार्यक्रम का हिस्सा थे ताकि स्वस्थ भागीदारी को प्रोत्साहित किया जा सके और दान की गई प्रत्येक इकाई के जीवन रक्षक प्रभाव को सुदृढ़ किया जा सके।

डीएमएसआरडीई, कानपुर

रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान औरं विकास प्रतिष्ठान (डीएमएसआरडीई), कानपुर में 26 सितंबर 2025 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का आयोजन यूएचएम सरकारी अस्पताल, कानपुर के सहयोग से किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य जरूरतमंद लोगों के लिए रक्त की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करना और स्वैच्छिक रक्तदान के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। राज्य सरकार के अस्पताल के साथ सहयोग ने सुनिश्चित किया कि सभी चिकित्सा प्रक्रियाओं का सावधानीपूर्वक पालन किया गया है, जिससे सभी दाताओं की सुरक्षा और कल्याण की गारंटी हो। रक्तदान शिविर का उद्घाटन कार्यवाहक निदेशक डॉ डी एस बैग ने किया। इस अवसर पर कार्यवाहक निदेशक, डॉ ए के सिंह वैज्ञानिक 'एफ'; डॉ कविता अग्रवाल वैज्ञानिक 'एफ'; श्री अजितेंद्र सिंह परिहार, वैज्ञानिक 'एफ'; अधिकारियों एवं कर्मचारियों; तथा डीएससी कर्मियों ने रक्तदान किया। शिविर के दौरान कुल 36 यूनिट रक्त रक्तदान किया गया

निरीक्षण/दौरा कार्यक्रम

डीआरडीओ प्रयोगशालाओं में आगंतुक

डीईएएल , देहरादून

सीआरएल–बीजी, पीडीआईसी–बीजी तथा बीईएल–पीके के अधिकारियों की एक टीम ने बीईएल–पीके की महाप्रबंधक सुश्री दीपा बाजपेयी के नेतृत्व में 26 सितंबर 2025 को डीईएएल के साथ संयुक्त रूप से की जा रही SDR गतिविधियों के लिए रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डीईएएल), देहरादून का दौरा किया। डीईएएल के निदेशक श्री मनोज कुमार ढाका की उपस्थिति में बीईएल और डील टीमों के बीच एक बैठक हुई। सेना मैनपैक SDR के FOPM की तैयारी की स्थिति, प्रगति, और योजना पर मुख्य रूप से चर्चा की गई। अन्य परियोजनाओं/प्लेटफॉर्मों/सेवाओं जैसे हिमशक्ति, ATAGS, QRSAM, और MHA इत्यादि में मैनपैक SDR के एकीकरण/प्रेरण की स्थिति और मुद्दे भी एजेंडे में शामिल थे। वाहन SDR

और हैंड–हेल्ड SDR के विकास के लिए भविष्य की योजनाओं तथा दोनों संगठन सभी एसडीआर फॉर्म कारकों के लिए उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं को संयुक्त रूप से कैसे पूरा कर सकते हैं, इस रोडमैप पर भी चर्चा की गई।

डीआईएचएआर, लेह

श्री कविंदर गुप्ता ने 13 सितंबर 2025 को लेह स्थित उच्च उन्नतांश रक्षा अनुसंधान संस्थान (डीआईएचएआर) का दौरा किया। डीआईएचएआर के केंद्र प्रमुख डॉ ओ पी चौरसिया ने उन्हें रक्षा कर्मियों और लद्दाख की नागरिक आबादी के लाभ के लिए डीआईएचएआर द्वारा की जा रही विभिन्न अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। संक्षिप्त प्रस्तुति के बाद, उन्होंने डीआईएचएआर के प्रायोगिक क्षेत्रों का दौरा किया, जहाँ उन्हें विभिन्न तकनीकों को कार्यरत हालत में दिखाया गया। डीआईएचएआर द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों में, उन्होंने विशेष रूप से स्पेस हीटिंग के लिए सौर तापीय तकनीक, ग्रीनहाउस खेती, भंडारण तकनीकों, और भार वहन के लिए बैक्ट्रियन ऊंटों में गहरी रुचि दिखाई। डीआईएचएआर के समग्र योगदानों की सराहना करते हुए, श्री कविंदर ने विशेष रूप से इस तथ्य की प्रशंसा की कि वैज्ञानिकों की छोटी लेकिन समर्पित टीम द्वारा विकसित की गई प्रौद्योगिकियों को सफलतापूर्वक क्षेत्र की आम जनता को हस्तांतरित कर दिया गया है, जिससे नागरिक–सैन्य भाईचारे के मौजूदा बंधन को और मजबूत किया जा रहा है।

डीएमएसआरडीई, कानपुर

डॉ एन रंजना, ओएस एवं निदेशक डीएफटीएम, डीआरडीओ मुख्यालय ने 15 सितंबर 2025 को रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान और विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर का दौरा किया। उनके साथ डॉ टी के नंदी, निदेशक डीआईए–सीओई आईआईटी (बीएचयू); सुश्री नीना सत्ती, वैज्ञानिक 'एफ' एवं डीएफटीएम समन्वयक आईआईटी (बीएचयू); तथा श्री शिशिर श्रीवास्तव, वैज्ञानिक 'एफ' एवं डीएफटीएम समन्वयक, आईआईटी कानपुर भी थे। डीएमएसआरडीई के ओएस एवं निदेशक डॉ किंगसुक मुखोपाध्याय ने निदेशक डीएफटीएम तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। डीएफटीएम के निदेशक ने ''रक्षा अनुसंधान की सीमाएं: डीएफटीएम और डीआईए–सीओई पहल'' विषय पर एक प्रस्तुति दी। डीएफटीएम के निदेशक ने सभी प्रभागीय प्रमुखों के साथ बातचीत की और विभिन्न डीआईए–सीओई, विशेष रूप से आईआईटी–बीएचयू तथा आईआईटी कानपुर के साथ डीएमएसआरडीई की चल रही एवं भविष्य की सहयोगी गतिविधियों पर चर्चा की।

आईएनएमएएस, दिल्ली

अर्जन गढ़ स्थित एयर फोर्स इंस्टीट्यूट ऑफ सीबीआरएन डिफेंस (एएफआईसीबीआरएनडी) के 22 भारतीय वायु सेना अधिकारियों की एक टीम के लिए, नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (आईएनएमएएस), दिल्ली में एक दिवसीय CBRN प्रशिक्षण दौरा आयोजित किया गया। आईएनएमएएस, दिल्ली तथा रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर), दिल्ली के संकाय सदस्यों ने वायु सेना अधिकारियों की क्षमता बढ़ाने के लिए व्याख्यान और प्रदर्शन दिए।

प्रतिभागियों को CBRN आपातकालीन प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं, जैसे सुरक्षा, घटनाओं का पता लगाना, पहचान, परिशोधन और चिकित्सा प्रतिक्रिया, के बारे में जागरूक किया गया। उन्हें सतह, भू–भाग और त्वचा परिशोधन; पीड़ितों और प्रत्युत्तरदाताओं की मनोवैज्ञानिक देखभाल; तथा CBRN चिकित्सा आपात स्थितियों के दौरान विभिन्न ऑर्फन दवाओं के उपयोग के बारे में भी जानकारी दी गई। CBRN की पिछली घटनाओं के केस स्टडीज पर भी चर्चा की गई।

एसएसपीएल, दिल्ली

● मेजर जनरल मोहित गांधी, कमांडेंट ईएमई स्कूल ने 28 अगस्त 2025 को ठोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एसएसपीएल), दिल्ली का दौरा किया। एसएसपीएल की ओएस एवं निदेशक डॉ मीना मिश्रा द्वारा ब्रीफिंग की गई, जिसके बाद आरएफ टेक्नोलॉजी, एमईएमएस, जेटी कूलर, आईआर टेक्नोलॉजी, एसआईसी टेक्नोलॉजी के लिए एसएसपीएल द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों पर चर्चा और प्रदर्शन किया गया।

● एवीएम विवेक सिंह ब्लोरिया, एसीएएस ऑप्स (सीआईटी) ने 9

सितंबर 2025 को एसएसपीएल, दिल्ली का दौरा किया। इस दौरे की शुरुआत एसएसपीएल की ओएस एवं निदेशक डॉ मीना मिश्रा द्वारा एक संक्षिप्त जानकारी साझा करने के साथ हुई, जिसके बाद प्रयोगशाला में विकसित तकनीकों पर गहन चर्चा और प्रदर्शन हुए, जिनमें सुरक्षित एवं सुदृढ़ रक्षा संचार एवं निगरानी, जेटी कूलर, आईआर तकनीक और एसआईसी तकनीक शामिल थीं। इस दौरे के दरमियाँ, उन्होंने नई निर्माण लाइन और क्वांटम प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र (क्यूटीआरसी) का भी दौरा किया, जो सुरक्षित संचार, उन्नत सामग्री, समय–निर्धारण, और संवेदन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में क्वांटम प्रयोगों के संचालन के लिए एक अत्याधुनिक सुविधा है।

डीआरडीओ ने अपनी रणनीतिक प्रौद्योगिकियों के लिए द हिंदू बिजनेसलाइन का चेंजमेकर पुरस्कार जीता

डीआरडीओ को 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान दुश्मन की संपत्तियों को निष्क्रिय करने और भारत की सीमाओं को सुरक्षित करने में अपनी भूमिका के लिए द हिंदू बिजनेसलाइन का चेंजमेकर ऑफ द ईयर अवार्ड–2025 मिला। यह पुरस्कार श्री उम्मालानेनी राजा बाबू, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक– मिसाइलें एवं सामरिक प्रणालियाँ, द्वारा प्राप्त किया गया।

डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली–110 054 द्वारा प्रकाशित